मूर्ति

अवतार

प्राक्कथन

इस पुस्तक के लेखक नवयुवक हैं – अर्थात् उनमें उत्साह और उद्वेग के साथ ही शोक की विह्वलता भी है, आशाएँ हैं और नैराश्य भी है। मैंने इस उपन्यास को बड़ी रुचि से पढ़ा और ग्रन्थकर्त्ता को उनकी सफलता पर बधाई देता हूँ।

कलाकार अपने चित्त की प्रवृत्ति को अपनी कला में स्पष्ट रूप से प्रकट करता है। जो भाव उसके हृदय में हैं, जो धारणाएँ उसके मस्तिष्क में हैं उनका विकास उसकी कला में होता है। जीवन की समस्याएँ, साधारण और असाधारण घटनाएँ, स्वाभाविक किन्तु मर्म्मस्पर्शी परिस्थितियां यदि कला में स्थान पायें तो आश्चर्य क्या ? कलाकार संसार से सीमित है, मनुष्य का जीवन उसकी कला का विषय है प्रकृति की सुन्दरता अथवा प्रकृति की कठोरता से वह प्रभावित होता है। कला चिरस्मरणीय रहेगी अथवा क्षणिक, यह इस बात पर निर्भर है कि कला का विषय तात्कालिक है अथवा मानविक जीवन से उसका दृढ़ सम्बन्ध है। कुछ तो समस्यायें ऐसी हैं कि जिनका सुलझाना मनुष्य की सामर्थ्य के बाहर है – जो सदा से रही हैं और सदा रहेंगी – यथा विरह, अकाल मृत्यु, सज्जन का कष्ट सहना, दरिद्रता इत्यादि। "दुःख संवेदनेनायेवँ रामे चैतन्यमाहितम्" राम का बन-

वास, सीता हरण, सत्यवान की मृत्यु, दमयन्ती का विलाप ये विषय ऐसे हैं कि उन पर काल का प्रभाव नहीं पड़ता। हम जानते हैं कि अब भी इस युग में इतने वर्षों के पश्चात् भी, कठोर विमाता के कहने से पिता अन्याय करता है, दुष्ट साध्वी को कष्ट देते हैं, अकस्मात असमय पुरुष रत्न अशेषगुणाकर का देहान्त हो जाता है, सुंदरी युवावस्था में ही विधवा हो जाती है। गोद का बालक अनाथ हो जाता है। अयोग्य पुरुष प्रभुत्व प्राप्त कर लेता है वर्षा समय सुहावना होता है, चन्द्रमा की ज्योति में शीतलता है और मेघ के गर्जन और विद्युल्लता में भय और आशंका और संयर्गकारिणी शक्तिभरी हुई है। इन विषयों से कला सर्व कालीन रहती है परन्तु यदि कलाकार इन सनातन विषयों को छोड़ कर किसी युग विशेष अथवा समाज विशेष के प्रश्नों पर ही प्रकाश डालता है तो उसकी कला कुछ दिनों तक तो जीवित रहेगी बहुत दिनों तक नहीं।

"मूर्ति" एक उपन्यास है – अर्थात् उसकी कथा काल्पनिक हैं और इसके पात्र काल्पनिक हैं इसका काल भी काल्पनिक है इसमें लेखक ने सन्तोष का प्रेम: कमला का शोक, कमला का नितान्त आजन्म स्नेह, कमला का सर्वस्व परित्याग, कमला की धार्मिक मार्ग में, वैराग्य के पथ पर शान्ति की आशा, वैराग्य में भी अदम्य प्रेम, सन्तोष की समाज सेवा, सन्तोष का आत्माभिमान, सन्तोष का ध्येय के अनुशीलन में सांसारिक प्रतिष्ठा का बलिदान ये उपन्यास के ऐसे अंश हैं जिनसे इसके जीवित रहने की आशा की जा सकती है

हरिजनों के प्रति अत्याचार, ब्राह्मणों की संकीर्णता, पुलिस की अन्यायपरता इत्यादि अंश ऐसे हैं जिनसे आज के पाठकों का तो मनोरंजन अवश्य होगा। परन्तु कुछ काल के पश्चात् इनका महत्व केवल ऐतिहासिक ही हो कर रहेगा।

चरित्र चित्रण में ग्रंथकर्त्ता सिद्ध हस्त हैं कुंज बिहारी, कमला, संतोष और राजा साहब इन चारों का चित्र बड़ी कुशलता से खींचा गया है। पुस्तक के पढ़ने से भास होता है कि ये सभी अपने चिरपरिचित मिलने वाले हैं।

प्रस्तावना लिखने वालों का बहुधा सिद्धान्त यह रहता है– "सत्यं ब्रूयान् प्रियंब्रूयातन्सत्यमप्रियम्।" परन्तु अन्त में मैं इतना कहना चाहता हूँ कि कहीं कहीं पुस्तक की भाषा खटकती है नासिक जिले के विलासपुर गांव में लोगों की भाषा ऐसी नहीं है "सुसुरी जानत नाहीं राम दिनवा के बाप का।"

अस्तु! ग्रंथकर्त्ता पढ़े लिखे प्रगतिशील सज्जन हैं। हिन्दी साहित्य का सौभाग्य है कि ऐसे सज्जन जिनकी हिन्दी मातृ भाषा नहीं है और जिनको देश की सेवा और देश की रक्षा में साहित्यिक संस्थाओं से दूर रहना पड़ता है इस प्रकार से योग्यता और तत्परता से हिन्दी की सेवा कर रहे हैं।

प्रयाग विश्वविद्यालय,
३ फरवरी १९३८ ई०

अमरनाथ झा

धन्यवाद

आज मेरे बड़े सौभाग्य का दिन है कि मेरी तुच्छ भावनाएं इस पुस्तक के रूप से आप के सामने उपस्थित हैं। पुस्तक लिखने से पहिले यदि लेखक का विचार मानवी रूप धारण कर लेता है तो वह धारणा लेखक को स्वयं नीचे गिरा देती है। पुस्तक लिखने के पूर्व हर लेखक के हृदय में ऐसे विचार होते हैं जिनको वह अन्य पुरुषों पर प्रकट करना चाहता है। ये विचार इसको चैन नहीं लेने देते। वह सोचता है और उनको शांत करने के उपाय करता है। परन्तु उसके विचार एक दिन वह रूप धारण कर लेते हैं कि वह उनको रोक नहीं सकता – पहाड़ फट कर ज्वालामुखी बन जाता है–एक मामूली मनुष्य अपने जलते विचारों के प्रकट हो जाने से लेखक बन जाता है। दोनों परिवर्तन एक ही तरह के हैं।

प्रकृति के अन्य कारणों की वजह से किसी पहाड़ के नीचे अग्नि धीरे धीरे धधकती रहती है और एक दिन वह इतना उग्र रूप धारण कर लेती है कि धरती उसको अपने हृदय में नहीं समा सकती। एक साधारण मनुष्य अन्य कारणों की वजह से धीरे २ अपने मस्तिक में ऐसे विचारों को स्थान देता है और वे विचार धीरे धीरे इतने बढ़ जाते हैं कि वह उनको प्रकट किये बिना नहीं रह सकता। दोनों का जन्म अकस्मात होता है। दुनियां दोनों को नहीं चाहती। परन्तु दोनों ज्वाला उसी भांति

धधकती रहती हैं और अंत में जब सब देखने वालों पर उनके विचार प्रकट हो जाते हैं तब दोनों को शांति मिलती है।

बहुत समय तक मैं अपने विचारों को अपने हृदय में शांति देता रहा। परन्तु आज वे इस रूप में आप के सामने प्रकाशित हो रहे हैं। इनका क्या फल होगा आगे देखने में आवेगा।

सबसे पहिले मुझे प्रोफेसर अमरनाथ झा को धन्यवाद देना है जिन्होंने अपनी सहानुभूति से मुझे उत्साहित किया और पुस्तक की प्रस्तावना लिखकर मेरे हृदय में एक नया उल्लास पैदा किया।

पुस्तक में अनेक त्रुटियां थीं जो मेरी दृष्टि में नहीं आईं और जिनको श्रीमती श्यामा जुत्शी ने बड़े ध्यान से पढ़ कर दूर किया है। मैं उनका बड़ा आभारी हूँ। इसके पश्चात् मैं आपने प्रिय मित्र महेन्द्र को धन्यवाद देता हूँ क्योंकि आपने हमेशा मुझको अपने विचारों को इस रूप में प्रकट करने का आग्रह किया। मैं श्रीमान बाजपेयी जी का बड़ा आभारी हूँ कि जिन्होंने पुस्तक को प्रकाशित कर मेरे स्वप्नों को प्रत्यक्ष कर दिया है।

दृति

"— —यह दो ऐसे प्राणियों की आत्म कहानी है जो आपस में मिलना चाहते थे परन्तु उनके सिद्धान्तों में अन्तर होने के कारण वे मिल न सके।

वे मिले जुदा होने के लिए और जुदा हुए फिर मिलने के लिए।

उन प्राणियों की यह कहानी उनके ही शब्दों में लिखी गई है। उनकी ज़बान हिन्दोस्तानी थी और उन्हीं की भाषा में मैं उनकी जीवन-कथा उनके प्रेमियों के सामने पेश करता हूं।

आशा है सब हिन्दोस्तानी भाई इसे स्वीकार करेंगे — —"

"अवतार"

प्रथमवार १०००
सन १९३७ ई०
मूल्य १॥) रु०

मुद्रक व प्रकाशक—
पं० प्रकाशचन्द्र बाजपेयी
प्रेम प्रेस, प्रयाग।

उनको
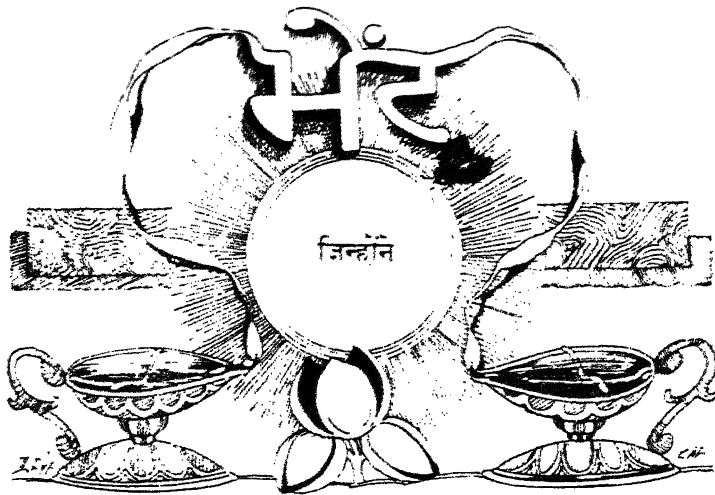
अपने कर्तव्य पर अपने प्राणों की आहुति दे दी।

—अवतार

आंसुओं

की

दो बूंदें

प्रोफ़ेसर बद्रीनाथ ब्राह्मण कालेज नासिक के प्रिंसिपल थे। बहुत विद्वान और लायक। इनका एक इकलौता लड़का था—बिंदु—जिसको वे बहुत प्यार करते थे। इसके सिवा उनका घर में और कोई नहीं था। घर वाली को मरे कई वर्ष हो गये थे। बिन्दु को उन्होंने बड़ी मुश्किल से पाला था। वह भी अपने पिता से बहुत प्रेम करता था।

हर दिन प्रिंसिपल साहब बिन्दु को साथ लेकर कालेज के समीप वाली सड़क पर सैर करने जाया करते थे। आज भी सैर को जाने के लिए बिन्दु को आवाज़ लगाई लेकिन उसने इनकार कर दिया यह कह कर कि मैं खिलौनों से खेल रहा हूं। लेकिन प्रिं० बद्रीनाथ न माने। वे उसको मना कर सैर के लिए साथ लेकर चल दिये।

कालेज से कुछ दूर गये होंगे कि नटखट बिन्दु ने गेंद सड़क के दूसरी तरफ फेंक दिया और फुर्ती के साथ गेंद उठाने के लिए भागा। प्रिंसिपल साहब उसको पकड़ते ही रह गये। लेकिन वह सड़क के दूसरी तरफ पहुंच गया। गेंद उठा कर वह फिर वापस आने लगा कि पीछे से मोटर ने हार्न बजाया। प्रिंसिपल साहब ने चिल्ला कर कहा 'इधर मत आओ' परन्तु वह सड़क के मध्य में पहुंच चुका था। मोटर बहुत करीब आ गयी थी। सड़क पर एक भंगी गंदगी का टोकरा सिर पर उठाये और एक हाथ में अपने लड़के की उंगली पकड़े चला जा रहा था। उसने जल्दी से टोकरा फेंक दिया और तेजी से बिन्दु को बचाने के लिए दौड़ा। परन्तु उन दोनों की मृत्यु आन पहुंची थी। ड्राइवर ने बहुत कोशिश की परन्तु कुछ वश न चला।

दो बेबस सड़क के दोनों तरफ खड़े दो लाशों को देख कर रो दिये। एक का बुढ़ापे का सहारा और दूसरे का बचपन का सहारा नहीं रहा। प्रिं० बद्रीनाथ ने रोते हुए बालक को बाहों में लेकर अपने हृदय से लगा लिया। दोनों रो रहे थे। किसका दुख ज्यादा है मनुष्य प्रतीत नहीं कर सकता।

———

उप

देश

बीस वर्ष गुज़र गये। सन्तोष ने एम० ए० की परीक्षा दी और कालेज में सर्व प्रथम रहा। सब उसको प्रि० बद्रीनाथ का लड़का समझते थे और प्रिंसपल साहब ने उसको बिल्कुल बिन्दु की तरह पाला था। वे उसको कभी अपनी आंखों से दूर नहीं देख सकते थे।

पिछले महीने से प्रिंसिपल साहब की अवस्था कुछ ख़राब रहती है। बुढ़ापे की वजह से बहुत कमज़ोर हो गये हैं। उन्होंने नौकरी से चंद दिन हुए इस्तीफ़ा दे दिया और आज ही पता चला कि कालेज कौंसिल ने उनकी जगह सन्तोष को फ़िलासफ़ी का प्रोफ़ेसर नियुक्त कर दिया है।

शाम हो चली थी। सन्तोष ने कालेज से आकर किताबें मेज़ पर रक्खीं और प्रिन्सिपल साहब के कमरे में गया।

"कहिए पिता जी आप की कैसी अवस्था है," सन्तोष ने पलंग पर बैठते हुए पूछा।

"अच्छी है बेटा। यह जान कर कि तुमको नौकरी मिल गई मैं बहुत प्रसन्न हूँ।"

"यह सब आपकी कृपा है पिता जी।"

"मेरी नहीं भगवान की। उसमें हमेशा अपना हृदय रखना बेटा। तुमको हमेशा सफलता होगी।"

"सत्य है पिता जी।"

"तुमको वह दिन याद है जब हम दोनों पहली बार मिले थे।"

"बहुत अच्छी तरह।"

"तुममें कितना परिवर्तन आ गया है। अब तुम ब्राह्मण कालेज के विद्वान प्रोफ़ेसर हो।"

"सत्य है पिता जी। सब कुछ बदल गया है परन्तु हृदय नहीं।"

"मतलब"

"मैं विद्वान हूँ सत्य है। अब मैं ब्राह्मण कालेज में प्रोफ़ेसर हूँ, सत्य है। दुनिया मुझको आपका पुत्र जानती है, यह सत्य न होते हुए भी सत्य है।"

"यह सत्य क्यों नहीं" पलंग से उठने की कोशिश करते हुए

प्रिन्सिपल साहब ने पूछा ।

"प्रीति और पालन पोषण के कार्य में आप मुझको अपने स्वर्गीय पिता से अधिक प्यारे हैं । परन्तु जो भगवान ने लिखा था बदला नहीं जा सकता । मैं हमेशा — — — ।"

"नहीं सन्तोष ।"

"क्यों नहीं पिता जी । आपही तो कहते थे कि सब मनुष्य एक हैं । जब बच्चा पैदा होता है तो उसमें कोई चिन्ह नहीं होते, जिससे यह मालूम हो कि वह ऊंच या नीच है ।"

"यह सत्य है और इसी सहारे मैंने तुमको पाला, परन्तु दुनिया बड़ी निष्ठुर है । वह पुराने रस्म रिवाज़ पर बुरी तरह से तुली हुई है और जब तक वह तोड़े नहीं जाते हमको उन पर चलना पड़ेगा ।"

"मैं उनको तोड़ूंगा ।"

"सन्तोष"

———

प्रोफ़ेसर

साहब

प्रोफ़ेसर सन्तोष को कालिज के सब लड़के बहुत चाहते थे। वे हर एक से मिल जुल कर रहते और बड़ा दिल लगा कर काम करते थे। लड़कों ने ठीक ही उनको 'महात्मा जी' की पदवी दे दी थी। रोज सबेरे कालिज के पास वाले मंदिर में वे पूजा करने जाते थे। उनको गाने का बहुत शौक़ था। हर रात्रि को दोस्त-मित्र इनके यहां इकट्ठा होते और ये बड़े मधुर राग में उनको परमात्मा की स्तुति सुनाते।

दुनियां इनको ब्राह्मण जानती थी। इनका हृदय ब्राह्मण की भांति पवित्र था। वे ईश्वर के भक्त थे—लेकिन वे जानते थे कि वे ब्राह्मण नहीं, नीच हैं। परन्तु दुनियां को बता नहीं सकते थे और

फिर बताने से लाभ। क्या सब मित्र जो अब उनको इतना प्रेम करते हैं यह जान कर कि वे नीच हैं भूल जावेंगे? क्या मित्रता में ऊंच नीच है? क्या हम किसी और जाति वाले से प्रेम नहीं कर सकते? क्या प्रेम और मित्रता एक ही सीमा के अंदर ही हो सकती है? अगर नहीं—तो वे फिर दुनियां को क्यों नहीं बता देते कि वे नीच हैं।

दुनियां तुम पर थूकेगी। सब तुमको दगाबाज़ कहेंगे। सब दोस्त तुम्हारे दुश्मन हो जायेंगे। तुमको एक भयंकर संसार में अपनी नैय्या अकेले ही चलानी पड़ेगी। ऊंची लहरें उठेंगी। उन लहरों में बड़े २ बेड़े डूब जाते हैं। क्या तुम उन भयंकर लहरों को पार कर जाओगे? और यदि पार भी कर गये तो उस किनारे पर तुमको क्या प्रतीत होगा—एक सुनसान दुनियां। जहां तुमको कोई जानता नहीं। जहां के सब निवासी गंदे और अज्ञान हैं—कौए अपने बीच में एक मोर को देख कर कांय २ कर उसको मार डालते हैं। तुम्हारा ज्ञान तुम्हारा नाश होगा। तुम उनको कुछ सिखा नहीं सकोगे। वे नीच हैं और इसको अच्छी तरह से जानते हैं और इसी में प्रसन्न हैं। वे अपने अज्ञान और ग़रीबी को दूर करने की कुछ कोशिश नहीं करते तो तुमको क्या पड़ी है।

वे गरीब हैं, अज्ञान हैं। दुनियां वाले उनको ठोकरें मारते हैं। वे इतना नीचे गिर गये हैं कि वे खुद नहीं उठ सकते। तुमको उनकी मदद करनी होगी। गिरे हुए को उठाना मनुष्य का कर्त्तव्य है। और यह गिरा हुआ तो तुम्हारा अपना ही है—क्या तुम

उनको ठुकरा कर चले जाओगे? क्या उनको भूख से रोता देख तुमको दया नहीं आयेगी? क्या उनकी आंसुओं से भरी आंखे देख तुमको रोना नहीं आएगा? अगर नहीं तो तुम मनुष्य कहलाने के योग्य नहीं हो और इस योग्यता से जिस पर तुमको इतना अभिमान है बिल्कुल व्यर्थ तथा दुर्लभ है।

उठो! इन गिरे हुओं की सहायता करो। यह सहायता करना तुम्हारा कर्त्तव्य है और कर्त्तव्य से डरने वाला कायर कहलाता है।

तुम लड़ो इन निहत्थे गरीब नीचों के लिए। उनके लिए लड़ो जिनका इस पापी संसार में कोई नहीं! जिन पर ऊंच जाति के लोग अनेकों प्रकार के अत्याचार करते हैं।

जिनको कुत्तों की तरह रक्खा जाता है। जो दिन भर काम करने पर भी पेट भर रोटी नहीं पाते।

तुम डर रहे हो। तुमको डर है कि इस तेज़ नदी में कूद कर बह न जाओ। आओ कूदो अपना भर जोर लगा कर पार करने की कोशिश करो। देखो शायद पार हो जाओ। अगर डूब गये तो तुम्हारी लाश किनारे पर लग कर सब को यह ज्ञान देगी कि तुम अपने कर्त्तव्य के लिए बलिदान हो गये। तुम दूसरों को एक रास्ता दिखा दोगे। एक ज्योति उठेगी और वह ज्योति सब संसार को प्रकाशित कर देगी। उस ज्योति का एक अंग तुम होगे।

जागो! समय व्यतीत हुआ जा रहा है। इसको अपने हाथ से न जाने दो। अपना कर्त्तव्य करो।

भि

खा

री

सन्तोष जल्दी से स्नान कर, कपड़े बदल मन्दिर को चल दिये। उनके दिमाग़ में रात्रि के सब विचार घूम रहे थे। उनको क्या करना चाहिये वे अभी नहीं सोच सके। उनका हृदय इस दुनियां को त्याग देने को कहता था। उनके पास धन था, पदवी थी, ज्ञान था परन्तु हृदय में शान्ति न थी। शान्ति पाने के लिए मन्दिर की ओर जल्दी जल्दी चल दिये। मन्दिर में भजन गाने हो रहे थे आज अमावस का दिन था। बड़ी भीड़ थी।

सीढ़ियों पर खड़े नीच मन्दिर में जाने वालों की तरफ़ आशा भरी नज़रों से देख देख ख़ुश हो रहे थे। वे इसी में प्रसन्न थे। कभी कभी छोटे बालक उतावले होकर पूछ लेते "बापू तुम

अन्दर क्यों नहीं चलते ?"

"नहीं बेटा अस बात नाहीं कहे होत। वह हमरे लिए नाहीं आय। वह बड़की देवी का मन्दिर है महिमा हम नीच नाहीं जाय सकित

"वहां का होय बापू ?"

"ए जानत मोंगा सर। जा भाग जा पैसा मांग।"

लड़का दौड़ कर चला गया और सन्तोष के पीछे पैसा लेने को लग पड़ा।

"अरे लड़के मैं पूजा करने आया था पैसा नहीं लाया।"

"अरे बाबू जी तुम्हार लड़का जीवित रहैं, तुम्हारी बड़ी बड़ी उमर होवै, तुम्हार बहू बेटी बनी रहैं, तुमको बड़ी बड़ी नौकरी मिलै।"

"तुमको कह तो दिया कि पैसा नहीं है फिर क्यों मेरा सर खा रहे हो," चिढ़ कर सन्तोष ने कहा।

"अरे बाबू जी मोंहका एक पैसा दे देव। तुमरी बड़ी उमर होय। हम तुमरा गुन गाउब। भगवान करै तुमरी बड़े घर सरकार में सुनाई होय।" लड़के के बाप ने रास्ता रोकते हुए कहा।

सन्तोष खड़े हो गये। सोचने लगे यह अजब मुसीबत आ पड़ी है। इस बवाल से कैसे पीछा छुड़ाएँ। उन्होंने बुड्ढे से नम्रता से कहा अरे भइया अगर पैसा होता तो दे देता। अब तो है नहीं।"

तो कोई कपड़ा लत्ता ही दे देव। देखो भइया ठंड के मारे मरा जाइत है। तापन काजै ईंधन नाहीं है। जाड़ा तो हमका भी लागत

है भइया। पर हमरी कोई सुनत ही नाहीं। तुम तो बड़े— —।"

"नहीं नहीं" गुस्से से सन्तोष ने कहा।

वे नीच का हाथ पकड़ कर मन्दिर से घर को वापस चल दिये। अभी मोड़ घूमे ही थे कि कुंजविहारी ने पीछे से आवाज़ दी "सन्तोष ठहरो तुमसे काम है।"

सन्तोष ठहर गये। कुंजविहारी ने पास आकर कहा "मैं मन्दिर में तुम्हारी बाट देखता देखता थक गया। तुमतो आज मन्दिर में विना पूजा किये ही वापस आगये। क्या बात है ?"

"कुछ नहीं" बुड्ढे ने कहा। "बाबू जी के पास टूटा पैसा ना रहै मोका घर देने के लिए जात हैं।"

"ले रे! ले!!" दो पैसे देते हुए कुंजविहारी ने कहा। "और इनका पीछा छोड़।"

वह सन्तोष का हाथ पकड़ मन्दिर की ओर वापस चल दिये।

————

निश्चय

पूजा पाठ करने के बाद सन्तोष को साथ लेकर पुजारी कुंज-बिहारी अपने घर की ओर चल दिये।

"देखो सन्तोष मैं तुमसे बहुत दिनों से एक बात पूछना चाहता था। आशा है तुम मान जाओगे।

"अगर मेरे योग्य हो तो अवश्य।"

"कोई कठिन समस्या तो है नहीं। परन्तु मेरे लिए बहुत जरूरी है। जब तुम्हारे पिता जीवित थे तब तो कोई मुश्किल नहीं पड़ती थी। परन्तु अब वे इस लोक को छोड़ कर चले गये हैं। अब तो तुम्हीं से आशा हो सकती है। ईश्वर ने लायक पिता को लायक ही पुत्र दिया है।"

"परन्तु"

"मेरी इच्छा है कि तुम कमला— —"

"मैं कमला" हिचकिचाते हुए सन्तोष ने पूछा।

"हां कमला को इस साल एफ० ए० की परीक्षा देनी है। उसको एक मास्टर की आवश्यकता है, तुम्हारे अतिरिक्त और कोई मुझको नज़र नहीं आता।"

"यह प्रशंसा तो आप व्यर्थ कर रहे हैं। मैं इस योग्य नहीं हूं।"

"नहीं सन्तोष तुमको मेरा कहना अवश्य मानना चाहिए। तुम जानते हो कि मैं उसको कालेज में भर्ती कर देता। लेकिन बहुत देरी हो गई है। उसने बड़ी देर बाद परीक्षा में शामिल होने का निश्चय किया है। अब मेरे पीछे पड़ी रहती है कि मास्टर ला दो मास्टर। कहो क्या ख्याल है?

"जैसी आपकी इच्छा।"

"मैंने तो पहिले ही कमला से कह दिया था। तुम पर मुझको बड़ी आशा थी।"

दोनों बातें करते २ पुजारी जी के द्वारे तक पहुंचे! इतने में भिखमंगों ने चारों ओर से उनको घेर लिया। एक ने पुजारी जी को छू लिया। पुजारी जी हरि ओ३म्! हरि ओ३म्! करते हुए अन्दर भागे और चुल्लू भर पानी में जनेऊ डाल अपने ऊपर छिड़क लिया और नौकर से कहा "मार के भगा दो सालों को!"

"नहीं" ज़ोर से सन्तोष ने कहा। "आप मंदिर के पुजारी हैं

और ऐसी बात आपको शोभा नहीं देती। इन गरीबों को आप क्यों पिटवाते हैं ?"

"देखो इन्होंने मुझको छू लिया है। अब मुझको फिर नहाना पड़ेगा।"

"अच्छा आप नहाइये। मैं घर जा रहा हूँ।" कुछ गुस्से से सन्तोष ने कहा।

"नहीं नहीं" सन्तोष की बांह पकड़ते हुए पुजारी जी बोले। "तुमको अवश्य अन्दर चलना होगा और कमलासे वक्तका फैसला करना होगा।"

"परन्तु अब मैंने अपना निश्चय बदल दिया है। मैं कमला को नहीं पढ़ाऊँगा।"

"क्यों ?"

"क्योंकि मेरे पास अब समय नहीं है।"

"देखो सन्तोष तुमतो कभी झूठ नहीं बोलते।"

"मैं अब भी झूठ नहीं बोलता। पहिले मेरे पास अवश्य समय था लेकिन अब मैंने अछूतों का उद्धार करने का निश्चय कर लिया है। इसलिए मेरे पास समय नहीं है।"

"आप को मेरा कहना मानना होगा।"

"नहीं"

"पिता जी मैं तो आपकी आशा करते करते थक गई लेकिन आपकी बातें ही नहीं खतम होती।" अन्दर से किसी मधुर स्वर ने कहा।

"बेटा तुम्हारे लिए एक प्रोफ़ेसर साहब को लाया था। परन्तु ये ड्योढ़ी पर आकर वापस चले जा रहे हैं।"

कमला दौड़ती हुई बाहर आई और सन्तोष को प्रणाम कर पुजारी जी के पास खड़ी हो गई।

"आप अन्दर क्यों नहीं चलते," मुस्कुराते हुए कमला ने सन्तोष से पूछा।

"मुझको काम है।"

"अच्छा पहिले अन्दर चलिए फिर काम कर लीजियेगा। आशा है बहुत जरूरी नहीं होगा।"

"नहीं नहीं पर – – –।"

———

क
म
ला

सन्तोष ने कमला को पढ़ाना शुरू कर दिया। वे हर शाम को छः बजे के करीब पुजारी जी के घर जाते और एक घण्टा पढ़ा वापस आ जाते थे।

कालेज में इम्तहान नजदीक आ गये थे। इसलिये काम ज्यादा हो गया था। उधर कमला को पढ़ाना शुरू कर दिया। इस बखेड़े में उनको अछूत उद्धार का निश्चय बिल्कुल भूल गया। जब कभी उनको उसका ध्यान आता तो वे यह कह कर कि इसके लिए अभी बड़ा समय है वे उसको भूल जाते।

पुजारी जी की गाड़ी सन्तोष को लेने के लिए आगई। उन्होंने शहर से कुछ दूर एक छोटा सा मकान ले रक्खा था। आस पास

कोई आबादी नहीं थी। हर ओर हरियाली देख आंखों को बड़ी शान्ति मिलती थी। सन्तोष ने किताबें उठा गाड़ी में प्रवेश किया और पुजारी जी के मकान की ओर चल दिये।

"प्रोफेसर साहब नमस्ते !" हँसते हुए कमला ने कहा।

"नमस्ते।"

"आज तो आप ने बड़ी देर लगा दी।"

"देर नहीं। मैं तो उसी समय चल दिया। जब तुम्हारी गाड़ी पहुँची।" गाड़ी से उतरते हुए सन्तोष ने कहा।

"आज तो मेरा दिल पढ़ने को नहीं करता। वह जो आप ने प्रश्न दिये थे अभी मैंने नहीं किये। कल करूंगी।"

"लेकिन"

"मैं तो पहले ही जानती थी कि आप नाराज़ हो जायंगे। परन्तु अब नाराज़ होने से क्या होगा। आइये बाग में चलें।"

"नहीं जब तुम्हें पढ़ना नहीं है तो मैं वापस जाता हूँ।"

"आप वापस नहीं जा सकते। आपको एक घण्टा यहां ठह-रना होगा।"

"किस लिये"

"क्योंकि आपको एक घन्टे की तन्ख्वाह मिलती है।" हँसते हुए कमला ने कहा।

"कमला मुझको यह नौकरी छोड़नी पड़ेगी।"

"कैसे ! मैं तो नहीं छोड़ने दूँगी। जनाब मुझको भी पता लग गया है कि आप दुनिया के किस कोने में रहते हैं। मैं वहां से

आप को (सन्तोष का नाक खींच कर) खींच लाऊँगी।"

"कमला तुम बड़ी शैतान हो" कुछ झुंझला कर सन्तोष ने कहा।

कमला दौड़ कर बाहर चली गई और दर्वाज़े में खड़ी होकर बोली "आप गुस्सा शान्त करें मैं अभी आती हूँ।"

सन्तोष आराम कुर्सी पर टागें रख कर कुछ सोचने लगे। परन्तु वहीं बैठे बैठे नींद आगई।

डुबा

डुबौवल

कमला दौड़ कर बाग में गई। उसको आशा थी कि सन्तोष जरूर उसका पीछा करेंगे। परन्तु वह नहीं आये। कुछ इधर उधर घूम कर वापस आई तो देखा कि सन्तोष मेज़ पर पैर रक्खे सो रहे हैं।

कमला ने झट पैन्सिल दवात में डाल प्रोफेसर साहब के मुंह पर चित्रकारी प्रारम्भ कर दी। चन्द मिनटों में उनका मुख ऐसा प्रतीत होने लगा जैसे रामलीला में काले लंगूरों का। कमला दौड़ कर दूसरे कमरे में गई और अपने ड्रेसिंग टेबिल से छोटा शीशा उठा लाई। वह उसने सन्तोष के आगे रख दिया। फिर एक कागज़ की बत्ती बना उसको धीरे धीरे सन्तोष के कान में डालना

शुरू कर दिया। उन्होंने समझा मक्खी है। हाथ उठा कर एक चांटा मुंह पर मारा। परन्तु कमला ने बत्ती पहिले ही निकाल ली। कुछ हाथ में नहीं आया। कमला की थोड़ी सी हँसी निकल गई लेकिन सन्तोष जागे नहीं। फिर थोड़ी देर बाद उसने वह बत्ती सन्तोष की नाक में डाली। छींक मारते ही उनकी नींद खुल गई। जब उनकी दृष्टि शीशे में पड़ी तो वे भौचक्के से रह गये। सोचने लगे यह क्या देख रहे हैं। कुछ समझ में नहीं आया। कमला से अब रहा नहीं गया और उसने जोर से हँस दिया। सन्तोष सब कारस्तानी समझ गये।

"तुम बहुत नटखट हो कमला"

"आहा! सन्तोष" हँसते हुए कमला ने कहा। "मैंने तो आप को सोने के लिए नहीं कहा था।"

"सोता न तो क्या। तुमतो चली गई थीं।"

"तभी तो आकर जगा दिया। धन्यवाद दीजिये शुक्रिया कीजिये। थैंक्यू करने की जगह आप मुझको नटखट बताने लगे।"

"नटखट नहीं तो क्या? आज होली तो है नहीं।"

"शायद" हँसते हुए कमला ने कहा।

"अच्छा अब मुझको हाथ मुंह तो धो लेने दो।"

"आइये" बाहर की तरफ संकेत करते हुए कहा।

कमला सन्तोष को बाग में ले गई। और वहां जो नहाने का तालाब था उसकी ओर संकेत करके बोली "जाइये मुंह हाथ धो लीजिये।"

सन्तोष मुंह हाथ धोने लगे। नटखट कमला ने धीरे धीरे उनकी तरफ़ बढ़ना शुरू कर दिया। पानी में सन्तोष को कमला की परछांईं नज़र आई और वे फौरन ताड़ गये कि क्या आने वाला है कमला बहुत नज़दीक आ गई थी। उसने तेज़ी से बढ़ कर धक्का देना चाहा। परन्तु सन्तोष पहले ही चौकन्ने बैठे थे। एक तरफ़ हट गये और कमला छपाक करती तालाब में गिर पड़ी। दो चार डुबकियां लेने के बाद उसने अपना सिर पानी के बाहर निकाला।

"मुझको बाहर निकालिये पानी बहुत ठंडा है।" बाहें बढ़ाते हुए कमला ने कहा।

"मैंने तो तुमको उसमें गिरने के लिए नहीं कहा था। शायद बहुत दिनों से स्नान नहीं किया।"

"परन्तु मैं डूब जाऊँगी" और उसने झूठ मूठ एक डुबकी लगाई।

"अच्छा" कह कर सन्तोष ने कमला का हाथ पकड़ उसको बाहर निकालना चाहा। कमला को तो शरारत सूझी थी। ऐसा झटका मारा कि मियां जी सीधे तालाब में आरहे। कमला जल्दी से बाहर निकल आई और जब सन्तोष किनारे पर हाथ लगा बाहर निकलने की कोशिश करते तो वह उनको थोड़ा सा धक्का दे देती।

कुछ देर बाद सन्तोष खीज गए। उनको कहीं जाना था। कपड़े सूखने में भी कुछ देर लगेगी। उन्होंने बड़ी नम्रता से कहा "कमला मुझको देर हो रही है।"

कमला ने हँस दिया।

"अगर मुझको तंग करोगी तो मैं पढ़ाने नहीं आऊँगा।"

"मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक।"

"नहीं मानोगी"

"अच्छा कहिए तोबा।"

"नहीं मैं तोबा नहीं कहूँगा।"

"तब तक मैं निकलने नहीं दूँगी।"

"लो बाबा तोबा"

ना

रा

ज़

गी

"कमला" धीरे से सन्तोष ने कहा।

"जी" जल्दी से कमला घर से निकली और सन्तोष को प्रणाम कर कमरे में आने का संकेत किया। दोनों चुप थे। आखिर कमला ने चुप्पी तोड़ते हुए कहा "आप आ ही गये।"

"आता न तो क्या। तुम्हारा इम्तहान तो बहुत करीब आ गया है। अगर असफल हुई तो पुजारी जी मुझे कोसेंगे।"

"ओ हो! अब पता लगा कि आप मुझको इम्तहान पास कराने आए हैं।"

"निश्चय तो ऐसा ही है। अच्छा कल का लेसन याद किया है कि नहीं।"

"नहीं"

"ऐसे तो काम नहीं चलेगा। अगर तुम सबक याद न करोगी तो – – –।"

बात काटते हुए कमला ने कहा "तो फ़ेल हो जाऊंगी।"

"और क्या पास।"

"तो अगले साल इम्तहान दे दूंगी।"

"इरादा तो बहुत ऊंचा है इसलिए आपको ज़रूर ऐसा ही करना चाहिए। और इसको सफल करने के लिए मैं बाधा नहीं दूंगा। बल्कि कुछ और आसान किये देता हूँ। पुजारी जी से कह दीजियेगा कि मैं कल से नहीं आऊंगा।" और जाने का बहाना करते हुए सन्तोष दरवाज़े की तरफ़ बढ़े।

कमला ने उनकी बांह पकड़ ली और मुस्कुराते हुए कहा "फिर वही गुस्सा। क्या आपको मालूम है कि मैंने फ़ेल होने का निश्चय क्यों किया?"

"नहीं"

"ताकि आप अगले साल भी मुझको पढ़ाते रहें।"

"यह बात है। देखो कमला यह तुम ठीक नहीं कर रही हो। तुमको पढ़ने में मन लगाना चाहिए।"

"यह कोई अपने बस की बात तो है नहीं।"

"तो पढ़ना छोड़ दो।"

"कभी कभी सोचती हूँ छोड़ दूं। परन्तु फिर आप का ख़्याल आ जाता है। शायद आपको और नौकरी न मिले।"

अब तो सन्तोष को गुस्सा चढ़ गया। ज़रा झल्ला कर बोले "तो यह सब मुझ पर दया हो रही है। आपके ट्यूशन के बिना मेरा पेट नहीं भरेगा।"

"पेट तो शायद भर जाय परन्तु दिल नहीं।" मुस्कुराते हुए कमला ने कहा।

"कमला तुम बहुत शरीर हो गई हो। और अगर मेरा कहना नहीं मानोगी तो मुझको सब बात पुजारी जी से साफ़ साफ़ कह देनी पड़ेगी।"

———

प्रेम

प्रोफ़ेसर संतोष कुमार को कमला को पढ़ाते करीब छः महीने हो गये। कमला उनको प्रेम करती थी और जिस समयसे वे उसको पढ़ाने आते वह उनसे हंसी खेल करना चाहती। परन्तु संतोष चाहते थे उसको पढ़ाना। कमला को सबक तो क्या पढ़ाना था खुद ही पढ़ने लगे।

इसके पहिले उनके हृदय में कभी ऐसा आंदोलन नहीं हुआ था। उनमें एक अजीब परिवर्तन अनुभव हो रहा था। किताबों को छोड़ कमला से हंसना और खेलना चाहते थे। जिस समय से वह उनके सामने आ जाती संतोष का हृदय कमल की नाई खिल जाता। परन्तु वे अपनी इस नयी खिली कली को भविष्य की

कल्पना के बड़े २ पत्तों से ढांक देते जिससे सिवाय उनके उस सुगन्धित फूल की महक को कोई और नहीं पा सकता था।

वे कमला को प्रेम करते थे। उन्होंने इसके पहिले कभी किसी से प्रेम नहीं किया था। कमला उनकी आंखों में देवी के समान थी।

क्या वे इस देवी के पाने योग्य हैं? क्या कमला यह जान कर कि वे कौन हैं उसी तरह प्रेम करती रहेगी?

ईश्वर हर एक के लिए है। हर मनुष्य उसकी पूजा कर सकता है। पूजा होती है प्रेम से, प्रेम जाति पांति से कोई रिश्ता नहीं रखता। प्रेम में कोई ऊंचा नीचा नहीं होता। स्त्री मनुष्य का प्रेम जीवन के लिए उतना ही ज़रूरी है जितना आत्मा के लिए ईश्वर का प्रेम।

तो फिर मेरे प्रेम में कोई बाधा नहीं हो सकती। कमला मुझसे प्रेम करती है और मैं उससे।

संतोष तुम विश्वासघाती हो। तुम अपना कर्त्तव्य नहीं कर रहे हो। तुम एक मित्र के विश्वास का अपमान कर रहे हो। जिस तरह गुलाब छिपा नहीं रह सकता क्योंकि उसकी मधुर सुगंध घनी झाड़ियों के अंदर से आ जाती है उसी भांति सचाई कागज़ के फूलों से छिपाई नहीं जा सकती। गुलाब का फूल मुरझा कर गिर जाता है। उसकी खुशबू भी मिट जाती है लेकिन सचाई कभी नहीं मिटती। वह लोहे पर लकीर की भांति हमेशा कायम रहती है।

संतोष तुम नीच हो। यह अवश्य एक दिन दुनियां पर प्रकट हो जायगा। फिर जब दुनियां तुमको नीच कहेगी, कोसेगी, लताड़ेगी तो तुम उसको सह नहीं सकोगे।

मैं नीच हूं। सच है। परन्तु इससे दुनियां को क्या वास्ता। मेरा हृदय है। उसमें प्रेम है। क्या मुझसे ज्यादा कोई कमला को प्रेम कर सकता है और वह मुझसे प्रेम करती है। तो फिर हम दोनों प्रेमी क्यों नहीं मिल सकते ?

नहीं ! संतोष नहीं !! तुम यह गलत सोच रहे हो। तुम कमला के प्रेम में पागल हो गये हो। इस पागलपन का बुरा नतीजा होगा। तुम कमला को अवश्य प्रेम करते हो। परन्तु इस प्रेम से क्या लाभ ? आदमी को उतनी ही छलांग मारनी चाहिए जितनी वह कूद सके। कमला तुमको प्रेम करती है। परन्तु वह यह जान कर कि तुमने उससे विश्वासघात किया है तुमसे घृणा करेगी। वह तुमको बुरा भला कहेगी। उसकी आखों में जो तुम्हारा चित्र बना हुआ है वह बिगड़ जायगा। उसके कोमल हृदय को बड़ी ठेस पहुंचेगी और शायद वह इस चोट को सह न सके। कमला को दुखी देख तुम सुखी नहीं हो सकते। तुम मनुष्य हो। दुःख सह सकते हो।

भूलो नहीं ! अभी तुम्हारा पहिला निश्चय भी पूरा नहीं हुआ। तुमको दुनियां से प्रेम करना है। एक से नहीं। अगर तुम कमला ही को प्रेम करोगे तो उस प्रेम में तुम सब दुखियों को भूल जाओगे। तुम्हारे नीच भाई और बहन तुम्हारी ओर देख

रोते रहोगे। जब बहुत समय गुज़र जायगा। जब जवानी की हवा जाती रहेगी। जब 'मनुष्य' प्रेम की ज्वाला मध्यम पड़ जायगी तब तुम को अपनी भूल नज़र आयेगी। परन्तु तब तुम सिवा रोने के कुछ न कर सकोगे। गुज़रा हुआ समय वापस नहीं आता। तुम इस कमला को जिसे तुम अब प्रेम करते हो घृणा करोगे।

उसको भूल जाओ।

आंख

मिचौनी

संतोष ने निश्चय कर लिया कि अब वे कमला को पढ़ाने न जायंगे। वे बरामदे में कुर्सी डाल बैठ गये। जैसे २ समय व्यतीत होता जाता था उनका हृदय कमला को देखने के लिए व्याकुल हो रहा था। उनकी आखें कमला को देखने के लिए चंचल हो रहीं थीं।

टमटम वक्त पर आ गयी। संतोष ने सोचा चलो आज चलें कल से नहीं जायेंगे। फिर हृदय पर पत्थर रख उन्होंने कोचवान से कह दिया कि जाओ कह दो आज से पढ़ाने न आवेंगे।

कोचवान सलाम कर चला गया। कमला बरामदे में बैठी उपन्यास पढ़ रही थी। पास ही इम्तहान की किताबें पड़ी थीं।

दिल तो उपन्यास में भी नहीं था। घड़ी घड़ी सड़क पर नज़र जाती थी और हर गाड़ी तांगे की आवाज़ सुन कर वह चौंक उठती।

उसको ऐसा प्रतीत हुआ कि उसके प्रीतम आ गये। उसका हृदय उछलने लगा। उसने हाथ बढ़ा उनको गले से लगाना चाहा परन्तु उन्होंने हाथ हिला पीछे हटना शुरू कर दिया। वह आगे बढ़ी वे तेज़ी से पीछे हट गये। समुद्र का किनारा नज़दीक था। बड़ी २ लहरें उठ कर उस ऊंचे किनारे से टकरा रहीं थीं उसने उनको पकड़ना चाहा। वह रोई, चिल्लाई परन्तु वे हाथ हिलाते हुए पीछेही हटते गये।

गाड़ी की घंटी बजी और कमला चौंक कर कुर्सी में बैठ गई। उसने सोचा कि आज गाड़ी से उतरते ही उनको अपने हृदय से लगा लूंगी। परन्तु नहीं। भारत की स्त्री इतनी गिरी हुई नहीं। उसमें मान है। उसको अपने हृदय पर बड़ा बस है। फिर मैं क्या करूं? वह सोचती ही रही परन्तु संतोष गाड़ी से नहीं उतरे। कोचवान ने गाड़ी से उतर कर कहा "बिटिया तुम्हार मास्टर कहत रहें कि हम न आउब।"

"क्यों"?

"ये तो हम जनते नाहीं। हम से तो इतना ही कहे रहेन सो हम तोहरे सामने कह दीन।"

"अच्छा चलो मैं तुम्हारे साथ चलती हूं।"

कमला उसी दम गाड़ी में बैठ संतोष के यहां पहुंची। संतोष सोच में पड़े आंखें बंद किये कुर्सी पर बैठे थे। कमला धीरे २

उनके पास तक पहुंची। उनको कुछ पता न चला। जल्दी से दोनों हाथों से उनकी आंखें मूंद लीं। संतोष चौंक पड़े। उनके दिल में एक तूफान सा उठा। खुशी का, प्रेम का। कमला के नरम २ हाथ उनके माथे को ठंडा कर रहे थे। उन्होंने आंखें खोलने का प्रयत्न नहीं किया। वह चाहते थे कि इसी भांति आंखें बंद किये लेटे रहें। जब आंखें खुलेंगी तो भयंकर दुनियां को देख कर उनको दुःख होगा। उन्होंने धीरे से कमला के हाथों को अपने हाथों में ले लिया। हाथ पर हाथ रखते ही उनके शरीर में बिजली सी दौड़ गई। वे चाहते थे कि उन कोमल हाथों को जोर से दबा रक्खें ताकि छूट न जायं।

उनको ऐसा अनुभव हो रहा था कि एक किश्ती में वे दोनों बैठे इस भयंकर संसार रूपी सागर को पार करने के चेष्टा कर रहेहैं। वे दोनों दुख और सुख के साथी हैं। उस दुख में प्रेम था और उस प्रेम में आशा। उस आशा के सहारे वे जल्दी ही इस समुद्र को पार कर जावेंगे। फिर उस किनारे पर पहुंच सुख और शांति से जीवन व्यतीत करेंगे। कोई उनके प्रेम में बाधा नहीं देगा।

संतोष भूल न जाओ। तुम्हारी ही नैय्या के साथ बहुत से अनाथ, दुखी, और सताए हुए अछूतों की आशाएं बंधी हुई हैं। उनके बोझ से तुम्हारी नैय्या बढ़ नहीं सकती। वह इतनी भारी हो रही है कि आगे बढ़ना दुश्वार है। कमला के प्रेम का बोझ उसको बिल्कुल डुबो देगा।

तुमको एक ऐसे नाविक की ज़रूरत है जिसका कुछ बोझ न हो। परन्तु जिसकी शक्ति से यह नैय्या दूसरे किनारे लग जाय। वह पतवार, वह खेवनहार है तुम्हारा "निश्चय" इस पर टिको। वह तुमको दूसरे किनारे लगा देगा।

प्रेम के तूफ़ान में पड़ तुम्हारी नैय्या डूब जायगी। एक पक्का इरादा कर लो और इस पर तुले रहो।

कौन ! धीरे से कमला ने संतोष के कान में कहा।

अाठ

सात

कमला सामने पड़ी हुई कुर्सी पर बैठ गई। संतोष आंखें बंद किये लेटे रहे। मनुष्य सूरज की ओर आंखें उठा कर देखता है परन्तु उसकी चमक से तिलमिला कर आंखें बंद कर लेता है और फिर अपने हठ को पूरा करने का साहस नहीं करता। संतोष को डर था कि वे कमला के अलौकिक चेहरे को देख कर अपना निश्चय भूल जायंगे।

"यह भी खूब तमाशा है कि किसी के यहां कोई आये तो दूसरा आंखें बंद किये ही पड़ा रहे। यह आपने कौन सी किताब में पढ़ा है ?"

"मैं खुद नहीं जानता" बिना आंखें खोले संतोष ने कहा।

"आज आप पढ़ाने क्यों नहीं आए ?"

संतोष चुप रहे। क्या जवाब देते। कमला ने पूछा "क्या तबियत कुछ खराब है ?"

संतोष ने सिर हिला दिया।

"यह तो आप बताइये कि आप पत्थर की मूर्ति की तरह क्यों बैठे हैं ?"

"पत्थर की मूर्ति," हंसते हुए संतोष ने कहा।

"और क्या ! न बात करते हैं न कुछ !"

"कमला तुम किस मूर्ति से प्रेम करती हो," जरा गंभीरता से संतोष ने पूछा।

"मैं किसी मूर्ति ऊर्ति से प्रेम नहीं करती। मैं ईश्वर से प्रेम करती हूं।"

"सच है। सब हिन्दू ही ईश्वर से प्रेम करते हैं। परन्तु मनुष्य का हृदय इतना चंचल है कि वह भगवान से सीधा हृदय नहीं लगा सकता। जिस तरह अपनी मंजिल पर पहुंचने के लिए तुमको कई पड़ाव आते हैं जिस तरह एक चित्रकार को अपना कौशल दिखाने के लिए एक माडल की जरूरत होती है उसी भांति मनुष्य को अपना हृदय स्थिर रखने के लिए एक मूर्ति की आवश्यकता होती है। वह उसके द्वारा अपना हृदय ईश्वर भक्ति में लगा सकता है।"

"शायद" सोचते हुए कमला ने कहा। "मुझको मूर्ति पूजा की फ़िलासफ़ी तो आती नहीं। परन्तु जब से मुझको होश

आया है मैं रोज़ पिता जी के साथ राधा जी के मंदिर में जाती हूं।"

"उस मूर्ति को देख कर क्या तुम्हारे हृदय में कुछ भावनाएं पैदा होती हैं?"

"कभी ख्याल तो नहीं किया।"

संतोष कुर्सी पर उठ कर बैठ गये और उन्होंने आखें खोलीं। कमला उनकी दुःख भरी आखों की तरफ़ देख रही थी। संतोष ने धीरे से कहा "हम मूर्ति से इस लिए प्रेम करते हैं कि वह कोई गुनाह नहीं कर सकती। वह पवित्र है और उसको हम जिस तरह का बनाना चाहें अपने विचारों के द्वारा बना सकते हैं।"

कमला ने सिर हिला दिया।

"उस मूर्ति को हम हमेशा प्रेम करते हैं और उस प्रेम में हमारे मरते दम तक कोई परिवर्त्तन नहीं आता। कई उस मूर्ति को नहीं चाहते। कई उसको भद्दा बताते हैं, बहुत से उसको नष्ट कर देना चाहते हैं, कई उसके पुजारी के प्रेम को देख कर उसे पागल समझ हंस देते हैं और कई उसके रास्ते में आकर उसको बाधा देने का प्रयत्न करते हैं। परन्तु----"

"उसका प्रेम और बढ़ता जाता है।"

"क्या यह सच है?" चौंक कर संतोष ने पूछा।

"क्या?"

"कि वह पुजारी अपनी मूर्ति को भूल नहीं जाता। उसको वह रास्ता कठिन प्रतीत नहीं होता कि वह अपने प्रेम में असफलता

देखते हुए भी अनेक प्रकार के दुःख सहते हुए अपने निश्चय पर अड़ा रहता है।"

संतोष बड़े गौर से कमला की ओर देख रहे थे।

"इसमें तो कोई शक की बात नहीं। जब तक दुःख नहीं मिलता तब तक सुख का स्वाद नहीं आता। जब तक मनुष्य नमक नहीं चखता उसको मिठाई का मज़ा नहीं आता। जब तक चोट नहीं लगती दर्द नहीं होता तब तक तन्दुरुस्ती का होना आदमी महसूस नहीं करता। ये दोनों अवस्थाएं हमेशा साथ २ रहती हैं। इनको अलग नहीं किया जा सकता।"

"एक इंसान सुख भोग सकता है परन्तु वही इंसान दुःख नहीं सह सकता।"

"हां" आह भरते हुए कमला ने कहा "यह सब मनुष्य और उसके कर्तव्य पर है। अगर वह अपने निश्चय पर अटल रहे तो उसको हर प्रकार के दुःख सहने के लिए तैय्यार होना चाहिए। वह दुनियां की बड़ी से बड़ी चीज़ को ठोकर मार सकता है। उसका धर्म है कि वह अपने रास्ते पर बिना रुके चला जाये। वह एक दिन अवश्य अपने पड़ाव पर पहुंच जायगा।"

"शायद" धीरे से संतोष ने कहा।

कुछ देर दोनों चुप रहे। संतोष ने फिर आखें बंद कर लीं। कमला कुछ देर सोचती रही, फिर बोली "आज आप क्या अंट-संट बातें कर रहे हैं?"

"कुछ नहीं। सोच रहा था कि अगर एक प्रेमी को यह

मालूम पड़ जावे कि उसकी सोने की मूर्ति सोने की नहीं लोहे की है तो उसको कितना दुःख होगा। शायद वह उसको उठा कर बाहर फेंक दे। प्रेम की जगह उसके हृदय में घृणा पैदा हो जाय।"

"तो वह ईश्वर से नहीं मूर्ति के सोने से प्रेम करता है। अगर उसका प्रेम सच्चा है तो वह मिट्टी की मूर्ति ही उसके लिए सोना है।"

"दुनियां में ऐसे मनुष्य बहुत कम हैं। जो एक चीज़ को किसी एक हालत में पाकर फिर उसी को दूसरी हालत में देख कर भूल नहीं जाते। एक अमीर जब गरीब हो जाता है तो उसके सब दोस्त उसको भूल जाते हैं।"

"मतलबी दोस्त मित्रता के सच्चे नहीं होते। वे मनुष्य के धन से प्रेम करते हैं। दौलत खतम हो गई और उनका प्रेम भी खतम।"

"हां" धीरे से संतोष ने कहा।

प्रेम

राग

शाम हो चली थी। चिड़ियां अपने घोंसले की ओर उड़ चलीं। कमला और संतोष चुप बादलों की ओर देख रहे थे। दोनों के हृदय में अन्य प्रकार के विचार उठ रहे थे। कमला दृश्य को देख कर बहुत खुश हो रही थी। सूर्य्य का अस्त होना कितना सुहावना प्रतीत होता है। संतोष के हृदय में कौतूहल सा हो रहा था। उनके दिमाग़ में कमला के कहे हुए वाक्य घूम रहे थे। "आदमी का धर्म है कि वह अपना कर्त्तव्य पालन करने के लिए सब कुछ बलिदान कर दे।" क्या उनको अपने कर्त्तव्य के लिए कमला को भूल जाना चाहिए? दुनियां में इससे ज्यादा उनके पास कोई बहु मूल्य चीज़ नहीं है।

मैं कमला को नहीं भूल सकता। वह मुझसे प्रेम करती है। वह यह जान कर कि मैं नीच हूं मुझसे उतना ही प्रेम करेगी। हम दोनों इतना प्रेम करेंगे कि एक दूसरे को छोड़ न सकें। तब अगर उसको मालूम हो जाय कि मैं अछूत हूं तो भी वह मुझको भूलेगी नहीं। और अभी इसके मालूम हो जाने की कोई आशंका ही नहीं।

संतोष तुम गलती कर रहे हो। तुमको जानना चाहिए कि कहना आसान है लेकिन उस बात का पूरा करना बड़ा कठिन है। कमला तो एक कोमल स्त्री ठहरी। तुम पुरुष होते हुए भी अपने कर्त्तव्य से हटे जा रहे हो। तो क्या वह दुनियां की हंसी और मजाक को सह सकेगी? हरगिज नहीं। तुम अभी से उसको भूल जाओ इसमें तुम दोनों को कम दुःख होगा।

यह सोच कर कि मैं कमला से सब कहे देता हूं उन्होंने कहना चाहा। परन्तु फिर यह सोच कर चुप हो गये कि वे सब बातें कमला से क्यों कह रहे हैं। शायद कमला उनको प्रेम नहीं करती। सिर्फ़ मजाक ही उड़ा रही हो तो।

"कितना सुहावना समय है। मेरा हृदय चाहता है कि मैं गाऊं।"

"अवश्य"

कमला ने गाया। उसने गाया 'सजनि घर आओ' संतोष कुछ देर सोचते रहे। उन्होंने भी कमला के साथ गाना शुरू कर दिया। दोनों के हृदय की प्रेम कामनाएं उस शीतल वायु को

मधुर करती थीं।

गाना खतम हो गया। दोनों एक दूसरे की ओर देखने लगे।

"दिल चाहता है कि मैं रोज इसी तरह गाया करूं।"

"मेरा भी," धीरे से संतोष ने कहा।

"तो हम दोनों ही इकट्ठे गाया करें।" मुस्कुराते हुए कमला बोली।

"अच्छा"

"अब मैं जाती हूं। देर हो गई है।" घड़ी देखते हुए कमला ने कहा। "मेरे पहिले सवाल का जवाब दीजिये कि आज आप आए क्यों नहीं ?"

"ऐसे ही"

"अच्छा तो कल जरूर आइयेगा। अगर नहीं आये तो मैं कभी गाना नहीं सुनाऊंगी।"

डांवां

डोल

प्रेम क्या है कोई बता नहीं सकता। उसका वर्णन करना बहुत कठिन है। इसके वर्णन करने से कोई लाभ भी नहीं होगा। क्यों कि दिल की वह हालत सिर्फ वही जान सकता है जिसने प्रेम किया हो। जिस भांति एक बालक को रेल गाड़ी देखने का चाव होता है और उसे देख कर उसका हृदय प्रफुल्लित हो जाता है। जिस भांति उस बालक का खिलौना टूट जाने पर रोना बन्द नहीं होता जब तक कि दूसरा खिलौना न मिल जावे। उसी भांति एक प्रेमी का बाल हृदय अपनी प्रेमिका को देखने के लिए हर समय व्याकुल रहता है और उसको पाने के लिए वह ज़मीन आसमान के कुलाबे मिलाने को तैयार रहता है। प्रेमी और बालक में सिर्फ

फ़र्क इतना है कि उसमें सुख और दुख बहुत ज्यादा है। प्रेमी का टूटा हुआ हृदय बनाया नहीं जा सकता और न ही उसको दूसरा खिलौना मिल सकता है। उसके उस खिलौने में जान है जिससे वह और कीमती और बहुत ज्यादा सुन्दर है। प्रेमी का प्रेम वही जानता है जिसने प्रेम किया हो।

प्रेम मनुष्य को अन्धा बना देता है। वह उस खिलौने को पा कर सब खेलना कूदना भूल जाता है और उसको एक पल के लिए भी अपने हृदय से दूर नहीं कर सकता।

प्रेम मनुष्य को आशा देता है और उस आशा के सहारे वह कठिन से कठिन काम करने को तैय्यार हो जाता है। क्यों? उस अनमोल खिलौने की कीमत चुकाने के लिए।

प्रेम में सफल होकर मनुष्य का हृदय बहुत बढ़ जाता है। वह हवा में उड़ने लगता है। वह खुशी से फूला नहीं समाता।

प्रेम में असफल होकर प्रेमी का हृदय टूट जाता है। वह उस बालक की तरह रोता है जिसका खिलौना टूट गया हो जिसके माता पिता बहुत दीन होने के कारण दूसरा खिलौना न दे सकते हों। वह चुपके चुपके रोता है। शायद वह आ जायें। वह हवा से बातें करता है। दुनियां उसको पागल कहती है।

सन्तोष ने कई दफ़ा निश्चय किया कि सब कमला को बतादें। परन्तु फिर इस डर से कि हाथ में आया हुआ शिकार छूट न जाय वे बनाये हुए निश्चय को भूल गये। अब उनको एक चाह थी, वह थी कमला को पाना।

वे उठे और कपड़े पहिन कर पुजारी जी के यहां जा पहुँचे। कमला पहिले से ही इंतज़ार कर रही थी। एक दूसरे को प्रणाम कर बैठ गये। पढ़ाई शुरू हुई। पुजारी जी अन्दर थे। इसलिए किताबें सामने और दिल कहीं और था। थोड़ी देर बाद पुजारी जी बाहर गये तो दोनों को मौका हाथ आया। सन्तोष कुछ झेंप रहे थे कमला चट ही बोल उठी "अब मेरा दिल पढ़ने में नहीं लगता। बहुत पढ़ लिया। आइये बाग में जा कर दिमाग़ ठंडा कर आवें।" दोनों बाग में चले गये। कमला चमेली के पास वाली बेञ्च पर बैठ गई। सन्तोष वहीं खड़े फूलों का एक गुच्छा बनाने लगे।

कुछ देर दोनों चुप रहे। कमला ने कहा "क्या आज फिर बुत बनियेगा?"

"मेरी तो यही इच्छा है कि हमेशा बुत बना रहूँ और कोई मुझको इसी तरह प्रेम करता रहे।" गुलदस्ता आगे बढ़ाते हुए "क्या मैं ये फूल अपनी देवी पर चढ़ा सकता हूँ?"

कमला ने मुस्कुराते हुए ले लिया।

"कमला"

"हां सन्तोष"

"क्या तुम मुझको – – –"

"बहुत ज्यादा" हँसते हुए कमला ने कहा।

"तुम मुझको हमेशा ही इतना प्रेम करोगी"

"नहीं"

"नहीं" ताज्जुब से सन्तोष ने पूछा।

"मेरा मतलब था" वह बेञ्च से उठी और सन्तोष के पास जाकर खड़ी हो गई। "नहीं ज्यादा।"

"लेकिन अगर तुमको मालूम – – –" सन्तोष के मुँह में आई हुई बात रुक गई।

"क्या ?" ताज्जुब से कमला ने पूँछा।

"कुछ नहीं। आओ खेलें।"

आत्मा

भिमान

दिन को मनुष्य रात की बनाई हुई सब तदबीरें भूल जाता है। लेकिन जब फिर रात पड़ती है और इस अंधेरे में दिन की सब बातें चित्रपट के सफ़ेद परदे पर अपना कौशल दिखाती हैं। तो मनुष्य को भूली हुई सब बातें याद आजाती हैं। वह फिर सोचता है। फिर निश्चय करता है। लेकिन आज का निश्चय कम कठिन है। होते होते एक दिन वह आ जाता है कि पुराने चित्रपट की जगह एक नया ही चित्रपट नज़र आने लगता है। उसमें ज्यादा आनन्द है। वह नया, रंगीला और इतना अद्भुत है कि वह उसी को देखना चाहता है।

सन्तोष और कमला में बड़ी प्रेम की बातें हुईं। रात को वे

निश्चय करते कि आज जरूर कमला को बता दूंगे। लेकिन उस समय जब कमला से मिलते सिवाय प्रेम के सब भूल जाते। फिर धीरे धीरे यह निश्चय बिल्कुल भूल गये।

अछूत का घाव जो उनके हृदय में लगा था उस पर प्रेम का मलहम लगने से उसका दर्द जाता रहा। परन्तु वह अभी इतना हरा है कि जरा सी ठेस लगते ही फिर खुल जायेगा और फिर पुराने घाव का बन्द होना बहुत कठिन है।

आज कालेज में लेक्चर है। सन्तोष के आग्रह से कमला ने जाने का इकरार कर लिया। दोनों पांच बजे कालेज हाल में जा धमके। सब से पूँछा गया कि कौन कौन बोलेगा। सन्तोष के कहने पर कमला ने भी अपना नाम लिखा दिया। फिर सबको बताया गया कि आज के लेक्चर का विषय "अछूत का होना भारत की उन्नति के लिए आवश्यक है।"

सुनते ही सन्तोष कूद उठे। कमला ने पूँछा क्या है। धीरे से बैठते हुए कहा "कुछ नहीं।"

व्याख्यान शुरू हुए। एक के बाद दूसरे ब्राह्मण महोदय ने अपने जिस्म को अपवित्र होने से बचाने के लिए और बिना जोर लगाए और पैसा खर्चे मिली हुई ताकत को हाथ में रखने के लिए अत्यन्त प्रकार की जरूरतें और उपदेश दे डाले। सन्तोष के माथे पर पसीने की बूंदें टपक रहीं थी। उन्होंने आंखें बन्द कर सब सुना। इन कटाक्षमय शब्दों से उनका घाव फिर हरा हो गया। कमला

उठी और उसने कहना शुरू किया "दुनियां के और किसी मुल्क में अछूत नहीं हैं। लेकिन और देशों में हमारे देश की तरह इतनी मूर्खता और अज्ञान नहीं। जब तक यह अज्ञान दूर नहीं होता तब तक अछूतों का होना जरूरी है। पुराने ऋषियों के बनाए हुए रस्म रिवाज इतनी जल्दी तोड़े नहीं जा सकते।"

तालियां बजीं सब खुश थे सन्तोष के आखों से घृणा और दुख के दो आंसू निकल पड़े। उनकी हरी चोट पर कमला की बातों ने नमक का काम किया। "प्रोफ़ेसर सन्तोष कुमार एम० ए०" उन्हों ने आंखें खोलीं। वे गुस्से से लाल हो रहीं थीं। वे सब कुछ भूल गये सिर्फ़ उनको एक बात याद रही वह थी 'आत्माभिमान'।

"मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह हमेशा उन्नति करे। लकीर के फ़कीर को मनुष्य नहीं कहा जा सकता। वह एक गुलाम की नाईं बताए हुए काम करता है। हर एक ज़माने में हमको उस ज़माने के मुताबिक चलना पड़ता है अगर हम नहीं चलेंगे तो अवश्य पीछे रह जायंगे और आगे दौड़ने वाले यह देख कर कि हम अपनी बेड़ियों के बोझ के कारण पीछे रह गये हम पर हँसेंगे। हमको चाहिए कि हम इन बेड़ियों को तोड़ें और आगे बढ़ें और जब तक जीत न जावें आगे ही बढ़ते रहें। यह काम बहुत कठिन है लेकिन हमारे और आप के लिए नहीं। अछूत भी एक मनुष्य है उसको हम अछूत इसलिए कहते हैं कि वह हमारे नीच काम करता है उसके न होने से हम बहुत मुश्किल में पड़ जांय और इस तकलीफ़से बचने के लिए हम उस पर हर प्रकार के जुल्म ढाने को तैय्यार हैं। वह

मनुष्य है। उसके भी हृदय है और उसमें चोट लगती है जैसे तुमको। वह बलहीन है। लेकिन वह और ज्यादा तुम्हारी सख्तियां सह नहीं सकता। वह दिन जल्द आने वाला है जब वह तुम्हारी बनाई हुई इस चहार दिवारी को तोड़ कर बाहर निकल आवेगा। उसमें और तुममें क्या फर्क है? जहां तुम जैसे पापी और अनर्थ करने वाले मौजूद हैं वहां पंडित बद्रीनाथ जैसे महात्मा भी हैं जिन्होंने मुझ अनाथ बालक को आश्रय दिया। बताओ मुझमें और तुममें क्या फर्क है? मैं अछूत हूँ, नीच हूँ, लेकिन" (सब लोगों ने धीरे धीरे उठना शुरू कर दिया कुर्सी पर बैठी कमला रो रही थी) "क्या मेरे पास हृदय नहीं? क्या मेरे दिमाग में तुम से कुछ कमी है? क्या मुझको चोट नहीं लगती। क्या मैं तुमको – –" किसी ने बाहर से कुछ फेंका वह सन्तोष की कनपटी में लगा। वे बेहोश हो कर वहीं गिर पड़े। एक चीख सुनाई दी। एक जोर की हँसी। बहुत से भाग गये। एक दुखियारी लड़की उठी। उसने उस बेहोश को देखा फिर रो दी। उसने उसको उठाने की कोशिश की। लेकिन बोझ बहुत भारी था। अंधेरा हो गया था। वे दोनों वहीं पड़े थे। एक बेहोश दूसरी होश में होते हुए भी कुछ नहीं कर सकती थी। उसके आंसू उसके मुख पर गिर रहे थे। उसको होश आया धीरे से कहा।

"कमला"

———

नाक कट गई

कमला संतोष को अपने मकान पर ले गई। पिता अभी मंदिर से नहीं आए थे। ढपोलशंख महाशय दौड़ते हुए पंडित जी के पास पहुंचे। सब राम कहानी कह सुनाई। 'अनर्थ हो गया, गजब हो गया।' सब पुजारी जी को कह सुनाया। पुजारी जी ने कानों पर हाथ लगा कर तोबा की, और हरि ओ३म् कह कर गहरी सांस ली। "ओ पापी क्या अपने साथ हम को भी नर्क में ले जाना था। हमको क्या पता था कि तू नाग है। अगर जान पाते तो उसी दिन पैर तले कुचल देता। कम्बख्त तुझे राधा जी के पुजारी के साथ भी धोखा करते शरम नहीं आई। तू ने मेरा सर्वनाश कर दिया।" सैकड़ों गालियां निकालते और

आवाज़ें कसते पुजारी जी घर पहुंचे। दरबान ड्योढ़ी पर मुंह बनाए बैठा था। उनको देख कर और नाक भौंह सिकोड़ ली। ढपोल शंख ने कान तो पहिले ही भर दिये थे। जब दरबान से पूछा बिटिया कहां है तो उसने फटे मुंह से कहा "वहां कहीं होंगी। भैय्या हम ऐसी नौकरी न करब।"

"क्या तेरी नानी मर गई" खीजते हुए पंडित जी बोले।

"नहीं गरीब परवर नहीं! हम का जानत रहे कि ब्राह्मण के घर मा भंगी भी रहत हैं। नहीं तो हम नौकरी काहे करतेन। बड़े राधा माता के पुजारी और आज बिटिया — —"

"बिटिया" गुस्से से पुजारी जी ने पूछा।

"जी हां हुजूर आज तो सारे शहर में हल्ला गुल्ला हो रहा है। वह जो बिटिया के मास्टर अहैं वो ब्राह्मन नहीं नीच अहैं।"

"तो फिर"

"बिटिया उनको अपने यहां ले आई हैं। और हम— —"

पुजारी जी दौड़े। एक एक कदम में चार चार सीढ़ियां चढ़ गये। फिर दालान में पहुंचे तो सांस चढ़ गई। सत्रह मन की लाश और उस पर अभी आरती का प्रसाद खा कर आये थे। बेचारे हांफते न तो क्या। हांफते और गालियां निकालते पुजारी जी बीच के कमरे में पहुंचे। जैसे हाथी अपनी सूंड़ से पेड़ गिराता और पौधों को कुचलता हुआ जंगल में भागता है और उसके इस शोर गुल को सुन कर शिकारी चौकन्ने हो जाते हैं। कमला को जब कमरे में कुर्सियां और फूल दानों के गिरने की आवाज़ सुनाई दी

तो वह एक दम चौकन्नी हो गई और दौड़ कर दूसरे कमरे में गई। पुजारी जी बेतहाशा सिर उठाये लपके चले आ रहे थे। कमला को देख कर एक दम खड़े हो गये। हांफ रहे थे। गुस्से से आवाज़ बंद थी। कमला उनके सामने खड़ी हुई रो रही थी। उसके विचारों की मूर्ति को बड़ी ठेस लगी थी। परन्तु टूटी नहीं थी। टूटे हुए शीशे का जुड़ना अत्यन्त मुश्किल है। परन्तु जिस भांति अग्नि में शीशे को पिघला कर उसे ढांचे में ढाला जा सकता है उसी भांति कमला अपनी मूर्ति को प्रेम अग्नि में डाल फिर नया बनाना चाहती थी। पुजारी जी की सांस जब काबू में आई उन्होंने गुस्से से कहा "कमला"

"हां पिता जी"

"कमला आज तुमने मेरी सरे बाजार नाक कटवा दी"

"क्यों"

"क्यों! देखो इसकी हिम्मत, फिर पूछती है क्यों। मेरा तो तूने सर्वनाश कर दिया। मैं तो पहिले ही जानता था कि तू हम सब को ले डूबेगी।"

"लेकिन पिता जी मैंने तो कुछ नहीं किया।"

"अभी कहती है कुछ नहीं किया। और न मालूम क्या करना चाहती है। फांसी चढ़ानी थी फांसी। जानती है बिरादरी से निकाले जांयगे। मंदिर में कोई सिन्नी चढ़ाने भी नहीं आएगा।"

"क्यों?"

"क्यों क्यों की धुन लगा रक्खी है। जैसे कुछ जानती ही नहीं है। कहां है मुआ वह तेरा मास्टर?"

"गालियां निकालने से पिता जी कोई लाभ नहीं होगा।"

"लाभ हो या न हो मैं कुछ नहीं जानता। बता वह कहां है? देखते ही उसका गला घोंट दूंगा।" दांत पीसते हुए पुजारी जी बोले।

कमला रो रही थी। पुजारी जी को यह देख और गुस्सा चढ़ गया। फिर तैश में बोले "बड़ी आई है रहम दिल। तू यह बता कि उसको मेरे मकान में क्यों लाई?"

"उनको चोट लगी थी। तकलीफ थी इस लिए ले आई।"

"तेरे सिवा तो और कोई डाक्टर नहीं था।

"परन्तु पिता जी इसमें हर्ज ही क्या है?"

"अभी हर्ज ही नहीं है। नीच को घर में घुसा लिया और फिर कहती है हर्ज ही क्या है?"

"वह मनुष्य है।"

"वह नीच है।"

"मैं उनसे — —" आंखें हाथ से बंद कर कमला जोर जोर से रोने लगी। उसका हृदय अब नहीं सह सकता था।

———

सम

भावा

"कमला" धीरे से संतोष ने पुकारा।

"जी" कमला पास आकर बैठ गई।

पुजारी जी कोचवान से गाड़ी जोतने को कहने गये।

"कमला तुम मुझको यहां क्यों लाई ?"

"चुप"

"यह तुमने ठीक नहीं किया मुझे तुम्हारी यह सहानुभूति देख बड़ी लज्जा आ रही है। भारत की स्त्री का हृदय बड़ा दयालु और सच्चा है। मैं मनुष्य होकर भी डरता ही रहा। मैं प्रेम में पागल हो रहा था। मैं सब कुछ भूल गया। कमला मैंने कई बार प्रयत्न किया कि तुमसे सब कह दूं। लेकिन कह न

सका। कमला मैं पापी हूं। तुम देवी हो मुझको माफ़ करो।"

कमला चुप थी। पलंग पर सिर रक्खे वह रो रही थी।

"तुम चुप हो कमला। तुमको बहुत दुःख है। यह सब मेरे कारण है। अगर तुम मुझको माफ़ नहीं करोगी कमला तो— —"

"मूर्ति कभी अपने पुजारी से क्षमा नहीं मागती।"

"मैं मूर्ति नहीं पापी हूं। मेरे हृदय में मलीनता है। तुम मुझको प्रेम नहीं कर सकतीं कमला। मेरा और तुम्हारा रास्ता बिल्कुल अलग अलग है। इस रास्ते में अब हम कभी नहीं मिल सकते। मुझको अपने पापों का पश्चाताप करना है। तुमको अपनी सचाई और गुणों का लाभ उठाना है। मुझको भूल जाओ कमला। इसी में तुम्हारा हित है।"

रोते हुए कमला ने कहा "भारत की नारी एक ही मनुष्य से प्रेम करती है।"

"नहीं कमला नहीं,"

कमला रो रही थी। पुजारी जी अन्दर आ गये। गुस्से से कहने लगे 'बेवफ़ा कुत्ते तुमको धोखा देते शर्म नहीं आई। जिस पेड़ की ओट में बैठा था उसी पेड़ की जड़ काटना चाहता था। तुझको नमक हरामी— —"

"पिता जी" चिल्ला कर कमला ने कहा।

"कमला तुम्हारी मैं और बातें नहीं सुनना चाहता। तू नादान है। तुझको एक ब्राह्मण पानी तक नहीं देगा। यह नीच

है।"

"परन्तु यह मेरे लिए देवता के समान है।"

"बस चुप रह। मैंने तेरी बकवाद बहुत सुन ली।"

संतोष पलंग से उठे और बाहर की तरफ़ चले। कमला ने उनको पकड़ लिया।

"कमला मुझको छोड़ दो,"

कमला ने उनकी बांह और जोर से पकड़ ली। पुजारी जी ने जब देखा कि इस तरह अब काम नहीं चलता तो उन्होंने एक तरकीब सोची। कमला को एक कमरे में बंद कर दिया और संतोष को गाड़ी में बिठा घर भेज दिया।

कमला पलंग पर लेटी सोच रही थी। वह संतोष से प्रेम करती है और वह उससे। यह वह अच्छी तरह जानती है। परन्तु उन्होंने मुझसे पहिले क्यों नहीं बता दिया? वह अभी अपनी धुन में ही मस्त थी कि पुजारी जी अन्दर आ गये और कमला के पास बैठ गये। कमला के सिर पर हाथ फेरते हुए उन्होंने कहा, "कमला रो रही हो?"

कमला चुप थी।

"देखो बिटिया तुम्हारे सिवा मेरा इस संसार में कौन है। अगर आज तुम्हारी माता जीवित होतीं तो मुझको ये दिन न देखने पड़ते। तुमको अपने पिता से बिल्कुल प्रेम नहीं? मैंने तुमको पाला पोसा है। देखो कमला मुझको कितना दुःख हो रहा है?"

कमला की हिचकियां निकल रहीं थीं।

"दुनियां में मान सब से बड़ी चीज़ है। जिसका नाम नहीं उसको दुनियां में कोई नहीं चाहता। मान मर्य्यादा के लिए आदमी को सब कुछ करना पड़ता है। जो कुछ हमारे ऋषियों ने लिखा है सत्य लिखा है। तुमको उनका कहना मानना चाहिए। अगर हम उनके बताए हुए रास्ते पर नहीं चलेंगे तो नर्क में जायंगे।"

कमला पिछले दिनों की सब बातें याद कर रो रही थी। वह कितने सुहावने दिन थे ?

पुजारी जी ने अपना व्याख्यान जारी रक्खा "कमला तुम तो बड़ी समझदार लड़की हो। तुमको मेरी लाज रखनी होगी। कोई सुन लेगा तो हमारी नाक कट जायगी। अब चलो बिटिया खाना खायें।"

कमला को साथ ले पुजारी जी चौके में गये परन्तु उसने खाने से इनकार कर दिया।

"अगर तुम नहीं खाओगी तो मैं भी तुम्हारे साथ भूखा रहूंगा।"

———

आख़िरी

मिलन

रात हो गई थी। बड़ी अंधेरी रात थी। हाथ पसारें तो हाथ नज़र नहीं आता था। कमला पलंग पर लेटी रो रही थी। पिता जी की बातों से उनको कितना दुःख हुआ होगा? कितने निर्दयी हैं? एक दुःखी मनुष्य को यह सब बातें कह डालीं। न मालूम उनकी चोट का क्या हाल है? मुझको चल कर देखना चाहिए। कुछ सोच कमला पलंग से उठी और पुजारी जी के कमरे में गई। वे उल्टे पड़े ख़ुर्राटे ले रहे थे। धीरे से दर्वाज़ा खोल कर बाहर निकली। कुछ दूर गई कि एक इक्का नज़र आया। उसको रोक कर गोलबाग चलने को कहा।

संतोष पलंग पर पड़े कराह रहे थे। उनके सिर में काफ़ी चोट

लगी थीं। परन्तु सिर के दर्द से उनके हृदय का घाव ज्यादा पीड़ित था। कभी कभी वे अपनी हालत पर हंसते। प्रेम की बातें याद आते ही उनको अपने कमजोर हृदय पर क्रोध आता। वे प्रेम में अंधे हो गये थे। परन्तु ईश्वर ने उनको रास्ता दिखा दिया है। अब वे इस रास्ते को कभी नहीं भूलेंगे। मेरे कारण कमला के हृदय में कितना दुःख होगा? मैंने यह ठीक नहीं किया। वह देवी थी। उसका हृदय प्रेम और उल्लास से भरा था। मैंने अपने स्वार्थ के कारण उसको चकना चूर कर दिया। मैं पापी हूं। मैं उस देवी के पैरों पड़ उससे क्षमा मागूंगा। वह अवश्य मुझको माफ़ कर देगी।

कमला धीरे धीरे अन्दर आई। संतोष आंखें बंद किये लेटे थे। आहट पाकर बोले "कौन"। कमला चुप रही। पास आकर खड़ी हो गई। संतोष पलंग से थोड़ा सा उठे कुछ देर उनको ऐसा मालूम हुआ कि वे स्वप्न देख रहे हैं। उनको अपनी आखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। कुछ देर सोच कर उन्होंने फिर कहा "कौन"

कमला फिर चुप रही।

संतोष ने आश्चर्य से पूछा "क–म–ला"

कमला चुप खड़ी थी। उसकी आंखों से आसुओं की धारा बह रही थी।

"कमला तुम यहां क्यों आई?" पलंग से उठते हुए संतोष ने कहा।

"अपने देवता से माफ़ी मांगने के लिए"

"कमला" जरा ज़ोर से संतोष ने कहा।

"कमला तुमने यह ठीक नहीं किया। तुमको यहां नहीं आना चाहिए था ?"

"क्यों"

"मैं पापी हूं। दुनियां मुझको पापी समझती है। तुमको भी यही कलंक लग जायगा। अगर किसी को पता लगा कि रात्रि को इस समय तुम मेरे यहां अकेली आई थी तो— —"

"तो" आश्चर्य से कमला ने पूछा।

"मेरा इस दुनियां में कोई नहीं। मैं नीच हूं और हमेशा वही रहूंगा। परन्तु तुमको अपनी और अपने पिता की मर्य्यादा का ख्याल रखना चाहिए।"

"नहीं संतोष नहीं। मैं इसकी बिल्कुल परवाह नहीं करती। मैं तुमसे प्रेम करती हूं।" रोते रोते कमला ने कहा।

"कमला तुम मुझको भूल जाओ।"

"यह मेरे बस की बात नहीं है संतोष। मेरा हृदय नहीं मानता। मैं तुमको कैसे भूल सकती हूं।"

कमला पलंग पर बैठ गई और हाथों में मुंह छिपा रोने लगी। संतोष सामने खड़े थे। उन्होंने धीरे धीरे कहा "कमला मैंने तुम्हारे साथ धोखा किया है। तुम अगर मुझसे प्रेम करती हो। तो मुझको माफ़ कर दो और हमेशा के लिए भूल जाओ। पहिले तुमको कुछ अवश्य दुःख होगा। परन्तु जैसे दिन बीतते

जावेंगे मेरी याद मिटती जावेगी। अब तुम घर जाओ कमला।"

"नहीं मैं घर नहीं जाऊंगी ?" रोते हुए कमला ने कहा।

"कमला पागल मत बनो। भारत की नारी को सब से प्रिय अपनी लाज है। भारत की नारियों के नाम पर धब्बा मत लगाओ। तुम देवी हो। लेकिन दुनियां यह जान कर— —।"

"क्या जान कर ?" जल्दी से कमला ने पूछा।

"दुनियां बात का बतंगड़ बना देती है।"

"मुझको इसकी बिल्कुल पर्वाह नहीं है। हम एक दूसरे से प्रेम करते हैं और हमेशा करते रहेंगे।"

"नहीं कमला नहीं।"

"क्यों नहीं ? क्या आप मुझसे प्रेम— —?"

"कमला मैं तुमको बहुत प्रेम करता हूं," रोते हुए संतोष ने कहा। "परन्तु यह प्रेम ठीक नहीं है। हम गलत रास्ते पर जा रहे हैं।"

"नहीं"

कमला ने संतोष का हाथ पकड़ लिया और उसने धीरे धीरे कहा, "अगर दुनियां हमको तंग करेगी तो हम इस दुनियां को छोड़ देंगे।"

"इसमें बहुत दुःख होगा।"

"मैं दुःख से नहीं डरती।"

"इसमें तुम्हारा अपमान है।"

"कैसा ?"

"तुम्हारे पिता को लोग गालियां देंगे। उनका जीना इस दुनियां में दूभर हो जायगा। इस बुढ़ापे में तुम उनको छोड़ कर कहां जाओगी ?"

"नहीं मैं उनको छोड़ कर कहीं नहीं जाऊंगी। हम सब यहीं रहेंगे। मैं हर रात्रि को आप से— —"

"नहीं"

"मैं हर रात्रि को आप से मिलने आऊंगी।"

संतोष ने कमला को अपनी बाहों में ले लिया। दोनों एक दूसरे की ओर देख कर रो दिये।

———

दो

रास्ते

बाकी की रात संतोष के लिए स्वप्न की तरह कट गई। कमला आई। रोई। कुछ कहा और चली गई। वह फिर आवेगी। कुछ कहेगी और फिर दूसरी रात को आने के लिए चली जायगी। जिस रात को वह आएगी वह रात मेरे लिए स्वर्ग के समान होगी। वह जो कुछ कहेगी मैं सुनूंगा। वह रोवेगी और मैं भी उसके साथ आंसू बहाऊंगा। धीरे धीरे हमको अपना दुःख भूल जायगा। वह फिर गावेगी मैं भी गाऊंगा और फिर दोनों इकट्ठे बहुत ही देर तक गावेंगे।

दिन चढ़ गया।

रात की बातें संतोष ने दिन के उजाले में देखीं। सुंदरता की

जगह उनको वही भयानक दृश्य नज़र आने लगा। ईश्वर ने उनको रास्ता दिखा दिया था। अब वे फिर भटके जा रहे थे। एक स्त्री का प्रेम उनको नष्ट कर देगा। नहीं वह अपने झूठे और मतलबी प्रेम से एक नन्हा सा दिल जिसमें सिवा प्रेम और सचाई के और कुछ नहीं है हरगिज़ नहीं तोड़ेंगे।

संतोष ने बहुत सोचा क्या करना चाहिए। लेकिन कुछ समझ में न आया, वे जानते थे कि दिन के बनाये हुए निश्चय रात को फिर भूल जावेंगे।

वे धीरे धीरे उठे। सब किताबें इकट्ठा कीं। और छोटा सा बिस्तरे का पुलिंदा बांधा।

मेरी देवी !

दिन रात मैं तुम्हारी ही पूजा करता रहा। इस पूजा में कितना प्रेम और सुख था यह मेरा हृदय जानता है। मैं जब तक जीवित रहूंगा हमेशा अपने हृदय की देवी की पूजा करता रहूंगा। इस प्रेम में पागल होकर मैंने बहुत से पाप किये। तुम देवी हो अति दयालु हो। तुम मुझको अवश्य माफ़ कर दोगी कमला !

मेरे जीवन का तुम एक सहारा थीं। तुम्हारे प्रेम के आवेश में मैंने भी क्या क्या उच्चाकांक्षाएं बनाईं। तुम्हारे प्रेम की ज्योति से मेरे सुनसान हृदय में फिर ज्योति पैदा हो गई। वे कितनी ख़ुशी के दिन थे ! वे कितने प्रेम के दिन थे। अब मैं उनको नहीं पा सकता। मैं रो रहा हूं। मेरे प्रेम का सूर्य्य भविष्य के अंधकारमय बादलों में छिप गया। अब मैं दूसरी ज्योति पाने के

दो रास्ते

लिए एक अंधेरे मार्ग पर जा रहा हूं। मुझको आशा है कि इस अंधेरी रात्रि में चन्द्रमा की रोशनी दिखाई देगी। वह रोशनी कितनी मध्यम होगी मैं जानता हूं। परन्तु यह जान कर कि यह चन्द्रमा की ज्योति भी तुम्हारे ही प्रेम के कारण है मेरे हृदय में बड़ी शांति होगी।

मैं इस अंधेरे रास्ते पर क्यों जा रहा हूं। मैं ख़ुद नहीं जानता। एक छिपी हुई शक्ति मुझको उस तरफ़ खींच रही है।

मेरी कमला! मुझको भूल जाना। मैं तुम्हारी प्रेम ज्योति का एक पतंगा था जो जल कर भस्म हो गया।

तुम आज रात को यहां आओगी। मैं तुम्हारे दर्शन नहीं कर सकूंगा। तुमको भी दुख होगा। परन्तु हम दोनों के लिए यह ही उचित है। मैं हमेशा के लिए तुमसे बिदा होता हूं।

मुझको माफ़ कर दो मेरी देवी।

तुम्हारा पुजारी—
संतोष

कमला आई, ख़त पढ़ा, रोई, कुछ कहा, किसी ने उत्तर नहीं दिया और वह चली गई।

थक कर संतोष एक पेड़ की ओट में बैठ गये। कोई ख्याल आया, कुछ रोये, फिर उठे और एक तरफ चल दिये।

कजली

का

ब्याह

विलासपुर एक छोटा सा गांव है। नासिक से कोई बीस मील। यहां चन्द ब्राह्मण रहते हैं किन्तु ज्यादा तर आबादी नीचों की है। नीचों पर ब्राह्मण क्या अत्याचार करते हैं वर्णन करना व्यर्थ है। वे मंदिर में पूजा नहीं कर सकते। गरीब होने के कारण जमीन नहीं जोत सकते। हां मजदूरी कर सकते हैं, ग़ुलामी कर सकते हैं और उसके फल स्वरूप जो वेतन मिलता है वह एक मनुष्य के पेट के लिए भी काफी नहीं। और फिर एक लुगाई और तीन बच्चे।

वे अपनी इसी हालत में ख़ुश हैं। जब शाम को काम से छुट्टी मिलती है तो सब आम के बड़े पेड़ के तले इकट्ठा होते हैं।

वहाँ उन्होंने गोबर का फेर लगा रक्खा है और उस गंदी आबादी में वह ही एक साफ़ जगह है ।

"नाच कहरवा" गाया जाता है । गालियां निकाली जाती हैं चिलम चलती है और कहीं से दारू भी मिल गई तो उसको भी नहीं छोड़ा जाता । हुल्लड़ गुल्लड़ करते रात हो जाती है । कई तो वहीं लम्बे लेट जाते हैं और रात को कुत्ते उनका मुंह चाटते हैं और कई जिनके घर वाले बच्चे हैं वे झोपड़ी में लुगाई से लड़ने झगड़ने आ जाते हैं । खूब शोर होता है मार पिटाई होती है । गालियां निकाली जाती हैं । दोनों लड़ने में कमी नहीं करते । बच्चे रोते हैं । मुहल्ले वाले इकट्ठा होते हैं लेकिन यह सोच कर कि शायद हमीं पर कुफ्र न टूट पड़े दूर ही रहते हैं । और कई जब वापस आते हैं तो पहिले ही से तूफ़ान बरपा होता है । आमने सामने वाले दो मकानों में दो औरतें मैले कपड़े पहिने एक कंधे पर और दूसरी बगल में छोटे बच्चे को उठाए गालियों की बौछार कर रही हैं ।

"देख रांड़ तोहका अभी हम बताइत हैं । उनका आवै देव।"

"तोर चुटिया कटवा के अगर जलावय न दीन तो तू रांड़ का कहे ।"

"रांड़ को देख मोर चुटिया कटवाई । सुसुरी जानत नाहीं राम दिनवा के बाप का । हड्डी पसली कुछ ना बचै पाई ।"

दोनों आदमी आ गये । दारू कम पी थी इस लिए कुछ होश में थे । पूछने पर मालूम पड़ा कि झगड़ा इस बात पर है कि

रामदिनवा की मां ने कुन्नू कहार की गाय का गोबर उठा लिया था। समझौता हो गया। गोबर वापस कर दिया गया और दोनों चुड़ैलें एक दूसरे की तरफ़ थूक कर अन्दर चली गईं।

आज पंचायत जरा जल्दी शुरू हो गई क्योंकि छेदी की लड़की का फ़ैसला करना था। दस वर्ष की हो गई अभी तक शादी नहीं हुई। अगर आज सर्व सम्मति से पास की हुई शर्तें उसने मंजूर नहीं कीं तो उसको बिरादरी से निकाल दिया जावे-गा। कोई उसको नेवता नहीं देगा और कोई उससे किसी बात का ताल्लुक नहीं रक्खेगा।

पंचायत शुरू हुई, बिरादरी के मुखिया कुन्नई बीच में बैठे और चारों ओर दूसरे बिरादरी वाले। छेदी भी आ गया। प्रणाम कर पीछे बैठ गया। मंत्री महाशय ने कहा।

"अब भैय्या छेदी हमरे हाथ में कुछ नहीं। अगर होत तो ठीक कर देइत। ये बिरादरी वाले तो मानत नाहीं हैन। मैं अकेला का कर सकत हूं।"

"भइया सब तुम्हरी किरपा से ठीक हो जाई।"

कुछ देर आपस में बातें होती रहीं फिर मुखिया ने कहा "हमने ई सोचा है कि तुम कजरी का ब्याह राम गुलाम से करदेव।"

"अरे भइया हमार लड़की तो दस बरस की आय और राम गुलाम तो चालिस बरस का बुढ़वा। एके अलावा ओकर पहिली लुगाई भी जीवत है।"

"ए से का होत है ! ओ बंसी ठाकुर के पु) पावत हैन के नाहीं। तुमार लड़की का मुख मे रक्खे। तुम उसका का बनाए हो।"

"अचार डलवैहै भइया अचार" किसी ने बीच में कहा।

"देखो भैय्या छेदी कजली को रामगुलाम से ब्याह दो। गौना एक आध साल बाद कर दिहेओ।"

"और मोहका रुपिया कितने मिलिहैं" रामगुलाम ने पूछा।

"तीन दस"

"नाहीं भैय्या नाहीं ! मैं तीन दस में शादी ना करबौं। मैं तो पांच दस लेइहों।"

अच्छा अच्छा सब ने कह दिया।

"और पंगत" किसी ने याद दिला दी "पंगत के बिना तो शादी नै होय सकत। हम सबका दाल भात भी खिलाना होई।"

"सुनत है छेदी"

"भैय्या जो तुम सब कहेओ सुन तो सब लीन लेकिन मोरे पास एकौ पैसा नाहीं हवै।"

"तो उधार काहे नाहीं लै लेत"

"मोहे कोई उधार देवत ही नाहीं है। रामललवा का दो बीसी देवै का अहै।"

"तो हमका जानत। न देवो तो तुम्हारी लड़की कौन ब्याही।"

"नाहीं भैय्या नाहीं। तुम जानत हो मैं कितना गरीब अहौं।

रामगुलाम भैय्या एक बीसी लै लेओ। मोर लड़की बहुत अच्छी अहय।"

"और गौना कब करिहौ?"

"दुइ एक साल बाद"

"ना भैय्या मैं तो दो बीसी से एकौ पाई कम न लेइहौं"

"मोर पास तो इतना होइ है ना।"

"मारो साले को। इसको बिरादरी से निकाल देव" सब ने कहा। छेदा को चारो तरफ से घेर लिया और लगे जूतियां चटखाने। उसने ज़ोर ज़ोर से चिल्लाना शुरू कर दिया। पीछे से किसी ने चिल्ला कर कहा "मत मारो क्यों मारते हो।"

पै

ग़ा

म

सांझ हो गई थी। चोट से सिर में दर्द हो रहा था, परन्तु सन्तोष सिर लटकाए कच्ची सड़क पर चले जा रहे थे। सांझ होते २ वे बहुत दूर निकल जायंगे। वे किधर जा रहे हैं? रास्ते पर कोई चिराग दिखाई नहीं देता। कोई रोशनी नज़र नहीं आती जो उनको बता दे कि तुम्हारी मंज़िल कितनी दूर है। सीधी सड़क बडी दूर तक दिखाई देती थी। उसके बाद नीला आसमान। जब एक कदम उठाते तो उनको आशा होती कि शायद कुछ नज़र आये। परन्तु वहां सुनसान समुद्र की नाई बहुत दूर तक सिवा जल के कुछ नज़र नहीं आता। वे इस सुनसान रास्ते पर क्यों चले जा रहे हैं। एक ओर प्रेम था, सुख था, कमला थी

दूसरी ओर कठिनाइयां हैं, दुःख है और अछूत हैं। एक तरफ़ बदनामी थी इस तरफ़ पूज्य काम। प्रेम ने उनको एक तरफ़ खींचा और कर्तव्य ने दूसरी ओर। वे सीने पर पत्थर रख कर बहुत दूर निकल आये थे। अब पीछे कदम हटाना कठिन है। जितना आगे वे बढ़ते जाते, उतना ही प्रेम का खिचाव कम होता जाता था। जब उनको कमला की याद आती तो वे सड़क के किनारे बैठ जाते कुछ सोचते, पीछे मुड़ते, कुछ दूर जा, रोकर फिर वापस चल देते। कोई देखने वाला न था नहीं तो हँस देता। दुःख और मुसीबत से उनके चेहरे और दिमाग़ में कितना परिवर्तन हो गया था। दो दिनसे कुछ खाया नहीं। रो रो कर आंखें अन्दर घुस गईं थीं। हजामत न बनाने के कारण उनकी शकल पुराने कैदियों की नाईं नजर आती थी। कोई देखने वाला न था नहीं तो यह हालत देख रो देता।

बोझ उठाए धीरे धीरे चले जा रहे हैं। क्या आज की रात फिर मुझको पेड़ तले काटनी पड़ेगी। नहीं ऐसे काम नहीं चलेगा। अब मुझको अपना काम शुरू करना चाहिए। परन्तु शुरू किस तरह किया जाय। हर एक काम के आरम्भ करने में मुश्किल पड़ती है और अगर वह आरम्भ हो जावे तो वह खतम होकर ही रहता है।

कुछ शोर गुल की आवाज सुनाई दी। किसी के रोने की आवाज़ कान में पड़ी। वह उस तरफ गये और देखा कि एक ग़रीब को कई हट्टे कट्टे मनुष्य मार रहे हैं। उन्होंने पास जाकर

कहा, "मत मारो। क्यों मारते हो"

सब छेदी को छोड़ कर आगन्तुक की ओर देखने लगे। उन्होंने समझा था कि शायद नम्बरदार या पंडित का कोई आदमी आया होगा। देखा तो एक आदमी मैले कुचैले कपड़े पहिने सामने खड़ा है। उनकी हिम्मत बंध गई बोले "तू कौन होत है हमका रोकन वाला"

"कोई नहीं भाई कोई नहीं। एक परदेशी हूँ. दुःखी हूँ जानता हूँ दुःख क्या होता है। इसलिए किसी और को दुःखी नहीं देखना चाहता।"

उन नीचों के समझ में कुछ नहीं आया। हां इतना वे जान गये कि यह कोई शहर का रहने वाला है।

"ओ भइया तुम अपनी गैल जाओ। हमरे काम में बाधा दइयो तो हम तुमका भी रगड़ देउब।"

"नहीं तुम ऐसे दुष्ट नहीं हो। एक आदमी को मार पीट कर तुमको क्या लाभ होगा।"

"हम एका मार डलबै, एका बिरादरी से निकाल दिया है। ई आपन लड़की का बियाह नहीं करत" गुस्से से राम गुलाम ने कहा।

"हम कहत रहे कि थोड़े में करा देबै पर मानत ही नाहीं। भैय्या एक लड़की की शादी औ दो बीसी और दस रुपइया और पांत। ए का बहुत है। कहत है हमरे पास पैसा ही नाहीं है।"

"हम कहत रहे बनिया से जाके उधार लै आओ तो कही नाहीं मानत। ऐसे पुरुष का हम बिरादरी में ना राखब।"

"ओ भैय्या" हाथ जोड़ कर बुड्ढे ने रोते हुए कहा, "मोरे पास एक पैसा भी नाहीं रहै। मैं हे बनिया के दो बीसी रुपैया देने रहे और कोठरी का किराया चुकाना है। भैया मोर पास कजरी की शादी करन काजे एक पैसा भी नाहीं है।"

"तुम सब बहुत मूर्ख हो," घूम कर सन्तोष ने सब की ओर देखा। "तुम नाम में ही नीच नहीं, तुम्हारी बुद्धि भी नीच है। तुम्हें अपने भाई को मारते लज्जा नहीं आती। तुम्हारी दिलेरी जब थी जब तुम हर एक इसको रुपया दे इसकी लड़की की शादी करा देते। वह तुम्हारा अहसानमन्द होता। जब तुमको ज़रूरत पड़ती तब तुम्हारी मदद करता। वह तुम्हारा भाई है, ग़रीब है, उसके पास पैसा नहीं तिस पर तुम उसको मारते हो।"

सब चुप थे। कालिज के लेकचर अब उनकी आंखों के सामने नाच रहे थे।

"तुम अगर सब मिल कर रहो तो तुमको इतना दुःख न उठाना पड़े। तुम भूखों न मरो। तुमको ठोकरें न लगें। यह सब तुम्हारी मूर्खता का कारण है। तुम क्यों नीच कहलाते हो। क्या तुम्हारा दिल अच्छी २ चीजें खाने को और सुन्दर २ कपड़े पहिनने को नहीं करता। क्या तुम मन्दिर में पूजा करना नहीं चाहते तुम सब चाहते हो परन्तु तुम्हारी बुद्धि निर्बल है। ब्राह्मण जब पैदा हुआ था क्या उसके माथे पर तिलक लगा था हुया ब्राह्मण के बालक और तुम्हारे बालकों में कुछ फ़र्क है। अगर है तो इतना जब से ब्राह्मण का बालक पैदा होता है वह शिक्षा और नेक काम

सीखता है और तुम्हारा बालक नीच और गन्दे काम। तुम अगर चाहो तो सुधर सकते हो। तुम वह कर सकते हो – – –"

"हम क्या कर सकते हैं" बहुत सी आवाजें आईं।

"सङ्गठन से जो चाहो तुम कर सकते हो। जहां संगठन है वहां कभी हार नहीं होती। जीत ही जीत है। तुम्हें अपने खोये हुए सुख वापस मिल सकते हैं। तुम पेट भर रोटी पा सकते हो। तुम मन्दिर में – – –"

"मन्दिर में" बहुत सी उत्साह भरी नज़रों ने सन्तोष की तरफ़ देखा।

"हां तुम मन्दिर में पूजा कर सकते हो तुमको रोकने वाला कोई नहीं। आओ उठो मनुष्य बनो। नीच जिन्दगी को छोड़ कर ऊँचे उठो।"

"बोलो सिया पति रामचन्द्र की जै"

"बोलो महाशय जी की जै"

सब ने सन्तोष को कंधों पर उठा लिया।

———
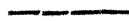
बिल्ली के बच्चे

कमला बहुत रोई। इतना रोई कि उसके आंसू भी सूख गये। संतोष का ख़त पास पड़ा था। उसको बार बार पढ़ती और रोती। दो दिन से उसने कुछ खाया नहीं। पुजारी जी ने बहुत कहा, समझाया, धमकाया लेकिन उसने सुनी अनसुनी सी कर दी।

दिन कट गये। रोना बन्द हो गया। लेकिन दुःखी हृदय में शांति नहीं आई। वह हर समय उदास रहती। बहुत कम बोलती और एक गहरे सोच में पड़ी रहती।

प्रेम और सुख से उसके हृदय की कली खिल उठी थी, परन्तु गुब्बारे की तरह ज्यादा हवा भर जाने से वह फट गई। फटा

हुआ गुब्बारा देख बच्चा सिर्फ रो देता है वह फिर भग नहीं जा सकता और न ही अब हवा में उड़ ही सकता है।

कमला एक कमरे से उठती दूसरे में चली जाती। घर उसको बिल्कुल सुनसान नजर आता था। दुनिया से उसको घृणा हो गई थी।

इम्तहान आया लेकिन कमला उसमें शामिल नहीं हुई। अब उसको इम्तहान पास करने की बिल्कुल चाह नहीं थी।

कमला पलंग पर लेटी कुछ सोच रही थी। पुजारी जी मंदिर से लौट कर आये और उन्होंने बाहर से आवाज़ लगाई "कमला।"

कमला चुप रही।

"कमला मेरी बिटिया बोलती क्यों नहीं।"

"हां पिता जी" धीरे से कमला ने कहा।

"इधर आ बेटा, देख क्या रचना है।"

कमला धीरे से उठी और उस कमरे में गई जहां पुजारी जी थे।

"देखो कमला कितने सुन्दर बंलूगड़े हैं। ऐसा मालूम पड़ता है जैसे बर्फ के बने हों।"

कमला ने एक को उठाया। उसकी आंखें अभी बंद थीं। मां ने कुछ नहीं कहा। कमला को नये खिलौने मिल गये। वह उनके लिये दूध लेने गई। एक छोटी सी चार पाई पर उसने उनके लिए एक पुराना गद्दा बिछाया। एक का नाम उसने रक्खा "चमचम।"

वह बहुत सुन्दर था और उसके माथे पर एक लम्बा भूरा दाग था। जिस लिये उसका नाम रक्खा गया "चमचम।" दूसरा था "डी डी" वह क्यों था "डी डी" हम नहीं जानते और तीसरी थी "गुड़िया" यह थी सब की रानी।

पुचकार कर उसने चमचम डीडी और गुड़िया को बुलाया। एक प्याले में दूध भर कर उसने उनके सामने रख दिया। बच्चों की मां भाग गयी थी। पांडे की मुर्गियां बाहर फिर रहीं थीं। पांडे के लड़के ने यह देखा तो दौड़ता हुआ अन्दर गया और दो नली बंदूक ला उसको वहीं ढेर कर दिया।

चम चम, डी डी, गुड़िया की मां मर गई लेकिन कमला ने मालूम न होने दिया। वह उनको अपने पलंग के पास सुलाती। खिलाती और पालती।

वह अपने नये खिलौनों के चाव में अपने टूटे हुए पुराने खिलौने का ख्याल भूल गई।

हरि

जन

बिलासपुर में धूम मच गई। नीचों ने अपनी सब आबादी को साफ़ किया। एक हफ़्ते के बाद ऐसा मालूम होता था कि शायद किसी ने नहला दिया है। एक दिन सब अछूत नहा धोकर संतोष के साथ हनुमान जी के दर्शन करने के लिए मंदिर की तरफ़ चले।

ब्राह्मणों को पहिले ही सूचना लग चुकी थी। वे वहां पर पूरी ताकत में इकट्ठा थे। संतोष ने आगे बढ़ कर एक बुड्ढे ब्राह्मण को जो मंदिर का पुजारी कहा जाता था प्रणाम किया। परन्तु उसने घृणा से मुंह मोड़ लिया। ब्राह्मणों को संकेत करते हुए संतोष ने कहा "महाशय गण हम हनुमान जी की पूजा करना

चाहते हैं।"

"नीच मंदिर के अंदर आ कर मंदिर को ब्राह्मणों के लिए अपवित्र नहीं कर सकते।"

"यह आपका भ्रम है। हमारे अन्दर आने से आपका मंदिर अपवित्र नहीं हो सकता।"

"नहीं हम तुम नीचों को मन्दिर में नहीं आने देंगे।" आंखें लाल लाल कर बुड्ढे ने कहा।

"मार दो पकड़ लो, तोड़ दो" बहुत सी आवाजें आईं।

"भाइयो" अछूतों की ओर संकेत करते हुए संतोष ने कहा "हमको इन पूज्य सज्जनों पर गुस्सा नहीं करना चाहिए। ये बड़े हैं, विद्वान हैं। अगर हम क्रोध से काम लेवेंगे तो यह ठीक न होगा। हमको प्रेम से काम लेना चाहिए। फिर ब्राह्मणों की तरफ मुड़कर "पूज्य सज्जनों अब हम अछूत नहीं हरिजन है। पिछले बनाए हुए रस्म, रिवाज ने हमको बहुत नीचे गिरा दिया था। परन्तु अब हम अपनी जगह हासिल करने के लिए फिर उठे हैं। हम हिन्दू हैं इस लिए हम मंदिर में आ सकते हैं। आप सज्जन ईश्वर भक्त हैं आप हम पर ऐसे अत्याचार नहीं करेंगे। हम सब आपके छोटे भाई हैं"

"हम सब कुछ मान सकते हैं परन्तु यह नहीं। मंदिर को अपनी जान रहते अपवित्र न होने देंगे।"

"महाशय आप भूल कर रहे हैं आप को उस समय का स्मरण है जो व्यतीत हो गया है। अब हम अछूत नहीं अब

हममें वृद्धि आ गई है। अब हम अपनी खोई हुई ताकत को पाने के लिए संगठित हुए हैं। आपने जो हम पर अत्याचार किये हैं उनका हम बदला नहीं लेना चाहते। हम अपने निश्चय से हरगिज पीछे नहीं हटेंगे। अगर आप हमारी बात मान जायेंगे और हम गिरे हुओं को ऊपर उठावेंगे तो यह आपका बड़ा उपकार होगा।"

"नहीं! नहीं!!"

"अभी तक हम बे जुबान थे, चुप थे परन्तु अब हम में ताकत आ गई है। हम आगे बढ़ेंगे और हमको इस रास्ते से कोई रोक नहीं सकता। भारत में एक आन्दोलन होगा जिसका कारण तुम होगे। फिर हम अछूत नहीं कहलायेंगे।"

"ऐसा कभी नहीं हो सकता। भेड़िया शेर नहीं बन सकता। कौआ मोर के पंख लगा कर कभी मोर नहीं बन सकता। जो जहां उत्पन्न होता है वहीं उसको शोभा होती है।"

"जब भेड़िया पैदा होता है तो वह भेड़िया नजर आता है। यही हाल दूसरे जानवरों का है। परन्तु सज्जन महाशय क्या आप दो बालकों को देख कर यह बता सकते हैं कि कौन ब्राह्मण और कौन नीच है।"

सब चुप थे।

"पुराने ज़माने के ऋषियों ने जो किया वह उस समय के लिए ठीक था। वे नियम बनाये थे परन्तु अब समय बदल गया है और हम सब को समय के मुताबिक चलना चाहिये। हम अपने खोए

हुए हक़ वापस लेंगे। और अवश्य लेंगे।"

बड़ा शोर गुल मचा। ब्राह्मण बहुत कम थे कुछ डर गये। किसी ने दर्वाजा बंद करना चाहा परन्तु दो चार हरिजन पहिले ही पहुंच गये।

दूसरे दिन अख़बारों में निकला कि बिलासपुर के ब्राह्मणों ने मन्दिर के द्वार हरिजनों के लिए खोल दिये।

सब ने ख़ुशी मनाई। हरिजनों ने अपनी जीत पर, ब्राह्मणों ने अपनी बड़ाई पर।

———

स

गा

ई

समय व्यतीत होते देर नहीं लगती। परन्तु दुःखी का समय बडी मुश्किल से बीतता है। हर घडी उसके लिए एक दिन के समान होता है। जैसे जैसे दिन गुज़रते जाते हैं वैसे वैसे दुःख भी मध्यम पड़ता जाता है।

कमला के दुःख के दिन पहिले तो बड़ी कठिनता से गुज़रे फिर चमचम, डी डी और गुड़िया खेलने को मिल गये। एक साल, दो साल गुज़रा कमला की आंखों के सामने का सीन बिल्कुल बदल गया। संतोष को वह प्रेम करती थी परन्तु अब उसका प्रेम मानवी प्रेम नहीं था। संतोष उसकी आखों के सामने देवता के समान थे। उनके अच्छे कामों का ज़िक्र अखबारों में

पढ़ कर वह प्रसन्न होती।

संतोष को नासिक से गये चौथा वर्ष था। शाम को कमला बाग में घूम रही थी कि पिता जी अंदर से आये और उसके साथ कदम में कदम मिला चलने लगे।

पुजारी जी—"कहो बेटा क्या सोच रही है।"

कमला—"कुछ नहीं।"

पुजारी जी—"कमला"

कमला—"हां पिता जी"

पुजारी जी—"मुझे तुम से एक बहुत जरूरी बात पूछनी है।"

कमला—"क्या।"

पुजारी जी—"मैंने तुम्हारे—तुम्हारे लिए एक वर ढूंढ़ा है।"

कमला ताज्जुब से चुप हो पिता जी की ओर देखने लगी।

पुजारी जी—"बिटिया बहुत सुन्दर है। उसके पिता बड़े अमीर हैं। कमला उनके यहां दो मोटरें और दो गाड़ियां हैं।

कमला (गुस्से से)—"मुझको कुछ नहीं चाहिए।"

पुजारी जी—"तू अभी नादान है। दौलत सम्पत्ति के सिवा इस दुनियां में कोई किसी को नहीं पूछता।"

कमला—"मुझको इसकी जरूरत नहीं है।"

पुजारी जी—"भारत की लड़कियां बड़ों का कहना नहीं मोड़तीं। तुम को मेरा कहना मानना होगा।

कमला (रोती हुई)—"परन्तु मैं अभी शादी— —।"

पुजारी जी—"क्यों नहीं।"

कमला—"मैं आपको अकेला छोड़ नहीं सकती।"

पुजारी जी—"तू मेरी फ़िक्र मत कर। सब मुंह में उंगलियां दे रहे हैं कहते हैं इतनी बड़ी कन्या होगई अभी तक हाथ नहीं रंगे।"

कमला—"पिता जी आप दूसरों की बातों में न आया करें।"

पुजारी जी—"मैं उनकी बातों में नहीं आता। परन्तु जो वे कह रहे हैं सच है।"

कमला—"परन्तु मैंने विवाह न करने का निश्चय किया है। आप मेरे प्रण को तोड़ने की व्यर्थ कोशिश न करें।"

पुजारी जी (ज़रा क्रोध से)—"मैं तुम्हारी अंटसंट बातें सुनते सुनते बहुत तंग आ गया हूं। अब मैं उनसे इन्कार नहीं कर सकता।"

कमला—"आप से इकरार करने के लिए किसने कहा था।"

पुजारी जी (गुस्से से) "मुझको तेरी हां-ना की आवश्यकता नहीं। तुझको वही करना होगा जो मैं कहूंगा। यही भारतीय-कन्या को शोभा देता है।"

कमला (रोते हुए)—"तो मेरा गला घोंट गंगा में क्यों नहीं बहा देते।"

पुजारी जी—(कमला के सिर पर हाथ फेरते हुए) "नादान लड़की।"

कमला—"जिस आदमी को मैं जानती नहीं, जिससे मुझको

प्रेम नहीं है उससे मैं कैसे बिवाह कर सकती हूं।"

पुजारी जी– तुमने पाश्चात्य सभ्यता से यही लाभ उठाया है। ऐसी बातें भारत की कन्या को शोभा नहीं देती। कन्या का बर ढूंढना उसके माता पिता का धर्म है।

कमला— परन्तु मैं और किसी से प्रेम करती हूँ।

पुजारी जी –(अचानक)–किससे ?

कमला —(रोतेहुए)— सं – तो – ष

पुजारी जी को तो मानों सांप ने काट लिया। एक दम पारा एक सौ एक डिगरी तक पहुँच गया। कोई लड़का होता तो उसी दम कचूमर निकाल देते। परन्तु यहां थी उनकी एकलौती एक मात्र आशा कमला। वह उसको मार न सके। आंखे निकाल कर बोले "अभी तक तू संतोष की याद कर रही है। कोई और होता तो जबान निकाल लेता। तुझको ऐसी बातें करते लज्जा नहीं आती। क्या एक ब्राह्मण की लड़की एकनीच से बिवाह कर सकती है। हरे भगवान अगर भारत में यह होने लगे तो अभी प्रलय आजाय। जितना तुमसे प्रेम करता हूँ जितनी सहानुभूति दिखाता हूँ। उतनीही तू मेरे सिर पर चढ़ती जाती है। काठ का उल्लू बात से नहीं मानता।"

कमला रोरही थी।

"कमला मैं और कुछ सुनना नहीं चाहता। तू फिर ऐसी फिजूल बातें अपनी ज़बान पर मत लाना। जो मैं कहता हैं वह बिना हूं हां किये तुझको करना होगा।

कमला (रोतेहुये) " मैं बिबाह नहीं करूं गी। ,

पुजारी जी (गुस्सेसे) – " क्या "

कमला — मैं बिबाह नहीं करूंगी।

पुजारी जी — यह तेरे हाथ में नहीं है

———

सरकारी

साड़

कमला की सगाई हुए छः महीने हो गये। वह बहुत रोई बहुत कहा सुना लेकिन किसी के सिर में जूँ तक नहीं रेंगी। सबने अनसुनी सी करदी। फिर उसने सोचा रंगने दो हाथ। इससे मेरा क्या बिगड़ेगा। इस तरह शादी तो हो नहीं सकती।

इलाहाबाद के राजा बाबू के लड़के से नाता हुआ था। बड़े अमीर थे। लाखों रुपये की सम्पत्ति और फिर एक यही लड़का। मुहल्ले भर की औरतें आतीं, गातीं तारीफें करतीं, सहेलियां आवाजें कसतीं परन्तु कमला कमरे का दरवाजा बंद किये अपने विचारों में मग्न रोती रहती।

जब कभी पुजारी जी ने शादी का नाम लिया। कमला ने विष

खाकर आत्महत्या करने की धमकी दी। और अभी जल्दी भी नहीं थी। राजा बाबू तो शादी के लिए बहुत जल्दी कर रहे थे। लेकिन छोटे राजा साहब इतनी जल्दी अपने पैरों में जंजीर नहीं डालना चाहते थे। बीबी आ जायेगी तो शायद गाना सुनने से रोके। बाहर न जाने दे और फिर इनको तो और ही स्वाद पड़ा हुआ था। एक स्त्री से प्रेम करना उनके लिए गुलामी थी। रुपया था। शहर के चार पांच लफंगे दोस्त थे। खूब गुल्छर्रे उड़ाये जाते थे। आज खुर्शीद बेगम तो कल चम्पाकली का नाच हो रहा है। शराब उड़ रही है और छोटे राजा साहब मस्त हैं।

बड़े राजा साहब चाहते थे कि शादी जल्दी हो जाय तो लड़का सुधर जाय। अभी नादान है। खरमस्ती करता है। जब वह आ जायगी सब ठीक कर लेगी। यह नहीं जानते थे कि बिगड़े हुए सांड़ को सुधारना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है।

छोटे राजा भैय्या का तो पूछना ही क्या। जब शादी की बात होती तो बिचके हुए सांड़ की तरह सीधे झपटते। जो जी में आता कह डालते। एक दफा तो मारपीट तक की नौबत आगई। बड़े राजा साहब डर गये अरे इतना हट्टा कट्टा है मानों मार ही दिया तो मैं घर का रहा न घाट का। सब देखने वाले क्या कहेंगे ? डरते हुये भी उन्होंने हार नहीं मानी। गुस्से से बोले "कुत्ते मैं तुझे रोटी का मोहताज बना सकता हूँ। तू जानता है ?"

छोटे राजा– हां जानता हूँ कि तुम्हारी अक्ल सठिया गई है। तभी तो ऐसी बातें कर रहे हो। गेंठ में बांध कर नर्क में ले जाना।

आजसे मैं भी तुम्हारे धनपर थूकता नहीं, जाता हूँ मजूरी करलूँगा।

वाह ! भाई छोटे राजा वाह !! क्या दांव मारा ! ऐसी चोट मारी है कि चोट खाते ही चारों खाने चित्त हो गये। मजाल कि बड़े राजा बात भी करें।

छोटे राजा उठे और दर्वाज़े की तरफ़ बढ़े। बुड्ढे ने अपने सहारे की लकड़ी हाथ से जाते देख उसको जोर से पकड़ लिया और बोले "नहीं बेटा नहीं। तुम इतनी जल्दी नाराज़ हो गये। मैंने तुम्हारी भलाई के लिए कहा था। फिर तुम्हारी मर्जी जब चाहना शादी कर लेना।

छोटे राजा दौड़ कर दोस्तों और यारों के पास गये और खुश खबरी कह सुनाई।

कल्लन मियां बोले "वाह भइया अब क्या। खूब मारा !

चप्कन मियां "आज फिर कहां गुलछर्रे उड़ेंगे ?"

खड़पल्ले राम "चलो फ़ातिमा बेगम मर रहीं होंगी।"

सन्त जी

चार साल तक संतोष ने मध्य प्रांत का दौड़ा किया। छोटे २ गांव में उनको बड़ी जल्दी सफलता प्राप्त हुई। एक तो यहां नीच ज्यादा थे और बहुत दुःखी। जब उनकी हिम्मत बंध गई तो उनको रोकने वाला कोई नहीं था। ब्राह्मण भी अब पुरानी बातें भूलते जा रहे थे।

संतोष को प्यार से सब संत जी कहते थे। इनको अपने प्रचार में गौरव था और जिस मनुष्य को अपने काम में गौरव होता है उसके मुख पर एक ज्योति होती है और यह ज्योति हर एक को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। संतोष एक गांव में एक हफ़्ते से अधिक नहीं ठहरते परन्तु एक ही हफ़्ते में उस गांव में एक नई

जिन्दगी पड़ जाती। रोने की जगह वहां सुख का वास हो जाता और गंदगी की जगह सफ़ाई।

नीच तो क्या ब्राह्मण भी संत जी के दर्शन करने के लिए आते।

कमला का प्रेम उन्होंने अपने हृदय में छिपा लिया था। दुःख को शांत करने के लिए मनुष्य को कोई ऐसा कार्य करना पड़ता है जिससे उसका दुःख शांत हो जाय। कमला को मिल गये थे खेलने के लिए चमचम, डीडी और गुड़िया, संतोष को जबान वाले बे ज़बान अछूत ! कमला के बलूँगड़े बड़े हुए। म्याऊँ २ करते भाग गये। संतोष के अछूत उठे बढ़े और फिर संतोष उनको छोड़ दूसरों को उठाने चले गये।

मध्यप्रांत में तो उनको ज्यादा आपत्ति नहीं पड़ी। परन्तु जैसे ही वे संयुक्त प्रांत में बढ़े उनको ज्यादा कठिनता पड़ने लगी। यहां अब नीचों की गिनती कुछ कम हो गई। ब्राह्मण और क्षत्री बढ़ गये। ब्राह्मण तो कभी २ डर जाते थे परन्तु ठाकुर जिन्होंने अपनी जिन्दगी भर लाठी का साथ नहीं छोड़ा वे कब इन मुट्ठी भर नीचों की धमकी में आ सकते थे।

संत जी आ रहे हैं। दूर २ तक समाचार फैल गया। नीच खुशी के मारे फूले नहीं समाते थे। काम काज के बाद सब इकट्ठा होते और घर बार की सफाई की जाती। संत जी ने इन नीचों के हृदय में क्यों इतना प्रभाव जमा लिया था ? बहुत कम मनुष्य जानते हैं। हम दूसरों की सहानुभूति और प्रेम जभी प्राप्त कर सकते हैं जब उनकी तरह रहें। उनके दुःख सुख में हिस्सा लें और

अपनी जान जोखम में डाल उनकी तकलीफ़ों को दूर करने की कोशिश करें।

अगर एक पुरुष जिसके पास लाखों रुपये हों, घर बैठे कुछ दान कर दे तो कोई उसकी क़दर नहीं करता। एक ग़रीब जिसके पास थोड़े रुपये हों वक्त पर किसी को कुछ दे दे तो वह हमेशा के लिये उसका कृतज्ञ हो जाता है और फिर जब मनुष्य अपने प्राण दूसरों के लिए न्योछावर करदे तो उसका क्या कहना सब उसकी उंगलियों पर पुतलियों की तरह नाचते हैं। ढोंग रचने वाले यह देख कुढ़ते हैं और हर प्रकार से कोशिश करते हैं कि अपनी ताकत न खो बैठें। घर में बजाई हुई तूती बहुत दूर सुनाई नहीं पड़ती। नीच भी तुम्हारा आडम्बर समझ सकते हैं। तुम कितने पानी में हो बताने की जरूरत नहीं। जो नेता यह समझते हैं कि घर में बैठे २ बिना दुःख भोगे, नेता बने रहेंगे, धोखे में हैं। नेता बनने के लिए पहली आवश्यकता है कुरबानी और यह कुरबानी बहुत बड़ी कुर्बानी होनी चाहिये। जिसको दूसरे देख सबक़ हासिल करें और कुरबानी करने पर तैय्यार हो। जहां पर सेवा से मतलब लाभ उठाना है वह सेवा कुरबानी नहीं कही जा सकती वह है ऊंचे दर्जे की मक्कारी। ऐसे मक्कार शेरों के चोले में भारत में भी बहुत से हैं।

मानिक पुर के ब्राह्मणों को पता लग गया कि संत जी यहां आरहे हैं। उन्होंने सब तैयारियां करली थी। पुलिस का एक जत्था भी इलाहाबाद से आगया ब्राह्मणों ने हरिजनों को बड़ी धमकियां

दीं गांव से बाहर निकाल देने का डर दिखाया लेकिन किसी ने परवाह न की। संत जी पैदल आये। उनके पीछे बहुत से हरिजनों की भीड़ थी जो खुशी से नाच रहे थे क्योंकि आज उनको एक नई दुनियां नजर आने लगी। वे भजन गाते गांव में पहुंचते सैकड़ों हरिजन आदमी औरतें उनके पैरों पर गिर पड़े। दीवारों और छतों पर मनुष्य इस भांति चिटपटे हुए थे जैसे शहद की मक्खियों का छत्ता। सबने फूल फेंके। उनके बिरोधी ब्राह्मण भी अपने हृदय की कामनाओं को रोक न सके और उन्हों ने भी दर्वाजे से छिप छिप कर उन्हें देखा।

———

मूठ

भेड़

रात को बड़ा जलसा हुआ और यह निश्चय पाया गया कि कल सवेरे हनुमान जी के मन्दिर में पूजा की जावेगी। कई ने कहा पुलिस आई है परन्तु संत जी ने कहा "हम उनसे डरते नहीं। सचाई रोब से दब नहीं सकती। हम जो काम कर रहे हैं ठीक है, और कोई उस काम को रोक नहीं सकता। जिनको किसी बात का डर है वे हममें शामिल न हों।"

"कुछ डर नहीं हम नाहीं डरब।" सैकड़ों ने कहा।

दूसरे दिन छः सौ आदमियों का जुलूस था। खूब हुल्लड़ मच रहा था। संत जी गले में फूलों का हार डाले सब से आगे आगे जा रहे थे। सात बजे के लगभग जुलूस हनुमान जी के मन्दिर के

करीब पहुँचा। पुलिस ने चारों तरफ घेरा डाल रक्खा था। दारोगा साहब ने ज़ोर से पुकार कर कहा कि जुलूस आगे नहीं जासकता।

ब्राह्मण मंदिर के चबूतरे पर बैठे यह दृश्य देख खुश हो रहे थे उनको अपनी कमज़ोरी पर लज्जा नहीं थी। अपने भाइयों को अलग और दुःख में देख वे गौरव कर रहे थे।

हरिजन भी मन्दिर के चारों ओर धरना देकर वैठ गये। शाम हो गई परन्तु हरिजन अपनी जगह से नहीं हटे। सब संत जी के साथ भजन गारहे थे। सड़क पर खाना बनाया गया और सबने खाया ब्राह्मणों को यह देख मुंह में पानी आगया। बेचारों ने दिन भर कुछ खाया नहीं था। भूख से पेट में चूहे कूद रहे थे। परन्तु वे नीच के हाथ का खाने से मरना अच्छा समझते थे वाह री तुम्हारी बुद्धि।

रात सारी सड़क पर कटगई। हरिजनों को खूब भजन गाते, पुलिस को पहरा देते, ब्राह्मण सज्जनों को भूखसे पल भर भी नींद नहीं आई।

सवेरा हुआ तोभी वही हाल था। यह आशा करना कि हरिजन भाग जावेंगे नितान्त मूर्खता थी। ब्राह्मणों को निश्चय होगया कि शायद भूखसे यहां ही देह त्याग देनी पड़े। आखिर तंग आकर पुजारी जी ने हाथ पैर जोड़े और कहा " हुजूर रास्ता बनादें ताकि रोटी तो घर जाकर खा आवें "

कोतवाल साहब—मैं बेबस हूँ। कुछ नहीं कर सकता।

पुजारी जी (हाथ जोड़ते हुये) नहीं हुजूर आप की बड़ी दया होगी।

कोतवाल —"मेरे पास कुल बीस सिपाही हैं और इधर हैं छः सौ।"

पुजारी जी —"(थैली देते हुए) हुज़ूर ये लीजिये।"

कोतवाल — "(थैली लेते हुए) कितने हैं?"

पुजारी जी — "हुज़ूर प... पचास रुपये।"

कोतवाल — "मैं सौ रुपये से कम में तो बात न करूंगा।"

पुजारी जी (डरता से) — "हमारे पास तो और हैं नहीं।"

कोतवाल — "तो पचास रुपये के लिये मैं अपनी जान जोखिम में तो डालता नहीं।" (थैली फेंक कोतवाल साहब एक ओर चल दिये)

पुजारी जी दौड़ गये। पचास रुपये और ले आये। कोतवाल साहब अपनी टेंट गरम कर भीड़ के पास पहुंचे और कहने लगे "ये भीड़ गैर कानूनी करार दी जाती है। सब आदमियों को हट जाना चाहिए नहीं तो पुलिस की ताकत से काम लेना होगा।"

कोई नहीं हिला।

"महाशय" संत जी की तरफ़ संकेत करते हुए "आपके लिये यह बेहतर होगा कि आप यहां से चले जांय। मंदिर ब्राह्मणों की जायदाद है। किसी की मिल्कियत पर ज़बरदस्ती कब्जा करना ज़बर जनी और बे कानूनी है।"

संत जी —"जो आप कहते हैं बिलकुल ग़लत है। मन्दिर ब्राह्मणों का नहीं सारे हिन्दुओं की जायदाद है। हमने कदम आगे बढ़ाया है और आगे ही बढ़ते रहेंगे। बहादुरों का

काम पीछे हटना नहीं है। या तो हम हनुमान जी के दर्शन कर यहां से जायंगे या हमारी लाश यहां से जायगी।"

कोतवाल– तो "इसकी जिम्मेदारी आप पर होगी।"

संत जी– "यहां पर हर एक सिपाही है जो अपने हक के लिये लड़ रहा है।"

कोतवाल– "लेकिन आपको रास्ते से हटना होगा।"

संत जी– "हरगिज़ नहीं।"

कोतवाल– "हमको ज़बरदस्ती करनी होगी।"

संत जी– "हम डरते नहीं।"

कोतवाल– (सिपाहियों की ओर इशारा करके) "हटा दो सबको अगर नहीं हटते तो लाठी चलाओ।"

पुलिस वाले थे सब ऊँच जाति के आदमी। ऐसा मौका कब हाथ से जाने देते। पैतड़े बदल २ बैठे हुये निहत्थों पर क्या २ वार किये कि चंद मिनटों में ही सैकड़ों आदमियों को अधमरा कर सड़क पर लिटा दिया। भीड़ में गड़बड़ पड़ गई। किसी ने एक ईंट उठा कर कोतवाल साहब की तरफ़ फेंकी। ठीक सिर में लगी और कोतवाल साहब हाय कर वहीं बैठ गये। हरिजनों को जोश आ गया। वे सब मन्दिर की तरफ़ बढ़े। संतोष उनको खड़े होकर रोकने की कोशिश कर रहे थे परन्तु शोर में उनकी बात कुछ सुनाई नहीं पड़ती थी। मार दो मार दो की आवाज़ें आरहीं थीं। कोतवाल साहब ने देखा कि हालत काबू के बाहर हो रही है और ब्राह्मणों की जान खतरे में है। हुक्म दिया गोली चला दो।

कइयों को गोलियां लगीं। सेठ जी भी गिर पड़े। सब तरफ़ रोने और चिल्लाने की आवाज़ें आने लगीं।

सब भाग गये पीछे पड़ी रहीं कुछ बेज़बान तड़पती हुई लाशें।

बलि

दान

कमला बहुत रोई। परन्तु अब रोये क्या होता था ? कई दिन वह बिस्तर पर बीमार पड़ी रही, सोचती रही, रोती रही। दुःख से उसका हृदय फट रहा था।

पुजारी जी ने उससे इन दिनों कुछ बात नहीं की। वह जानते थे जलती हुई आग में तेल डालने से ज्वाला और बढ़ जायगी। इस ज्वाला को धीरे २ आप ही मध्यम हो जाने दो। फिर आंसुओं की बौछार कर उसको बुझा देंगे।

उनको संतोष की मृत्यु का समाचार सुनकर बहुत दुःख हुआ। अरे भाई किसी जानवर की मृत्यु होती है तो भी दुःख होता है ये तो फिर भी मनुष्य थे। पुजारी जी अच्छी तरह जानते थे कि

उनकी हत्या में उनका कितना हिस्सा है। परन्तु इस बात में खुश थे कि छुटकारा मिल गया। अब कमला रोज़ यह राम कहानी सुना तंग न करेगी।

कमला रोई, चिल्लाई। पुजारी जी भी रोये, विलाप किया और फिर कमला को मना ही लिया। कमला ने हां करदी, सिर्फ पिता का आग्रह और दुःख देख कर। परन्तु उसने निश्चय कर लिया कि जीवन रहते किसी और से प्रेम नहीं करूंगी।

खूब बाजे बजे, तुतियां बजीं और कमला की शादी छोटे राजा के साथ बड़े धूम धाम से हुई। कमला ससुराल पहुँच गई। छोटे राजा, कल्लन मियां और खड़पल्ले राम ने खूब गुलछर्रे उड़ाए और मस्त हाथी की भांति झूमने लगे।

बहुत सी औरतें आईं। गाना बजाना हुआ। मुंह दिखाई के रुपये मिले परन्तु कमला को सिवाय अन्धकार के कुछ नज़र नहीं आया। इस हंसी मज़ाक से उसके दिल में सुइयां चुभ रही थीं।

रात हो गई। सब औरतें चली गईं। कमला को शयनागार में पहुँचा दरवाज़ा बन्द कर दिया गया। वह इस खुशी के अवसर पर रोई क्यों? उसने अपनी आंसुओं की धारा को बन्द करने का प्रयत्न किया। वह अपने को धिक्कार रही थी कि उसने यह दिन देखने के बजाय आत्महत्या क्यों नहीं करली।

दरवाज़ा खुला और फिर बन्द हो गया। शराब में मस्त झूमते झामते छोटे राजा अन्दर आये और पलंग पर बैठ गये।

कमला पलंग से उठ कर कुछ दूर खड़ी यह नया स्वांग देख

रही थी। उसका दुःख घृणा में बदल गया। वह वहां से भाग जाना चाहती थी। लेकिन उसके पैरों में बिल्कुल बल नहीं था। वह एक बेबस चिड़िया की भांति जाल में फंस गई थी। इस जाल में उसको फंसने के लिए कोई लोभ नहीं दिखाया गया। उसको अपने ही पिता ने इस भभकती हुई ज्वाला में धक्का दे दिया। परकटी चिड़िया की नाईं वह फड़फड़ा रही थी। परन्तु उड़ नहीं सकती थी। वह किसको कोसती, किसके सामने रोती, कोई सुनने वाला न था।

छोटे राजा बड़ी देर तक कमला की ओर देखते रहे और चतुर आंखों से परखते रहे कि कितनी सुन्दर है। कुछ भी हो पर खुरशेद सी नाक नहीं है और ना ही चम्पा जैसी आंखें। हां रंग में अख्तरी से बाजी जरूर ले गई है। लेकिन जिन्नत बानो को तो छू भी नहीं सकती और देखो खड़ी कैसी है। अभी अगर चमेली होती तो मजा आ जाता। नाज और नखरे से दिल खुश कर देती। और जिस तरह रोज की आदत थी उन्होंने कमला को उंगली के इशारे से अपनी तरफ बुलाया। लेकिन वह हिली भी नहीं। छोटे राजा ने फिर इशारा किया परन्तु कमला ने घृणा से मुँह मोड़ लिया। कमला की यह ढिठाई देख छोटे राजा को गुस्सा चढ़ गया। आज तक तो किसी औरत ने उनकी बात नहीं मोड़ी थी। आज ये उनकी विवाहिता स्त्री है तिस पर उनका कहना नहीं मानती।

छोटे राजा– "इधर (झूमते हुए) आओ।"

कमला ने अनसुनी कर दी। छोटे राजा उठे और कमला की

तरफ बढ़े परन्तु वह एक तरफ हट गई। छोटे राजा शराब में मस्त कुर्सी से टकरा कर गिर पड़े। कमला की हँसी निकल गई, वह थी घृणा से भरी हुई।

छोटे राजा उठे और गुस्से से कमला की तरफ दौड़े। कमला दर्वाजे के पास खड़ी हो गई। दर्वाजा बन्द था। छोटे राजा ने उसका हाथ पकड़ लिया और बोले "अब कहां जाओगी ?"

कमला चुप थी।

छोटे राजा— "तुम ऐसी तो मैंने सैकड़ों देखी हैं। शादी करा कर (हा हा) अब भागने का ख्याल आया है। कहां जाइयेगा ?"

कमला— "जहां भाग्य ले जावेगा।"

छोटे राजा— (हँसते हुए) "तेरे भाग्य तो यहां ले आये हैं।"

कमला चुप थी। उसने झटका दे कर अपनी बांह छुड़ा ली और भीगी बिल्ली की तरह दर्वाजे के पास खड़ी रही। छोटे राजा की कामवासना बहुत बढ़ रही थी। उन्होंने प्रेम से कहा "तुम मेरी हृदयेश्वरी हो आओ मेरे पास बैठो।"

कमला वहीं खड़ी रही।

"तुमको मेरा कहना मानना होगा। तुम मेरी स्त्री हो। तुमको मुझसे प्रेम करना होगा।"

कमला ने घृणा से कहा "मैं तुमसे प्रेम नहीं कर सकती।"

छोटे राजा (गुस्से से)— "तू मेरी स्त्री है।"

कमला— "तुम मेरा शरीर नष्ट कर सकते हो। परन्तु हृदय नहीं।"

छोटे राजा— "तू मुझसे प्रेम नहीं करती ?"

कमला "नहीं ! हरगिज़ नहीं !!"

छोटे राजा– हा ! हा !! हा !!!

चम्पा कली

छोटे राजा को क्रोध चढ़ गया। आज तक किसी ने उनका उतना अपमान नहीं किया था। अगर कोई करता उसकी जिह्वा निकलवा लेते। उन्होंने सोचा चलो इसको सबक सिखायें। सीधे कल्लन मियां के यहां पहुँचे। वहां भी रंग में भंग पड़ा हुआ था।

कल्लन– "छोटे राजा साहब यहां कैसे ?"

छोटे राजा– "वो माली मेरा कहना नहीं मानता। उसको जताने आया हूँ कि उसके बिना मैं मर नहीं जाऊँगा।"

कल्लन– "देखो उसकी भौंह। कल की छोकरी और आप का कहा नहीं मानती।"

छोटे राजा– "जिन्दा रहें हमारी बेगमात तो हमको किसकी

मानता है कि उसको नशा चढ़ा है। मोटर स्टार्ट कर चल दिये लेकिन बहुत दूर न गये होंगे कि खंभे से टक्कर मार दी।

———

दाम

कल जिस घर में बाजे बज रहे थे आज हाहाकार हो रहा है। बड़े राजा तो गम के मारे बेहोश हो गये। लेकिन कमला की आंखों से एक आंसू भी नहीं निकला। कइयों ने कहा "बहू का पैर पड़ा है। मनहूस है।" कइयों ने कहा "हम तो पहिले ही जानते थे कि वह कुछ न कुछ कर बैठेगा।" बहनों ने मुंह में उंगलियां देते हुए कहा "कितनी सुन्दर बहू थी लेकिन नीच को शर्म नहीं आई। पहली रात का भी विचार नहीं किया। वह तो बेचारी मर जायगी।"

खबर दो दिन बाद पुजारी जी को भी लगी। आये, रोये, अपने और कमला के भाग्य को कोसा और चले गये।

कमला ने विधवा के वस्त्र धारण कर लिये। बड़े राजा बहुत बीमार हो गये थे। घर में कमला के सिवा कोई नहीं था। उसने उनकी बड़ी सेवा की और मौत के मुँह से बचा लिया। बड़े राजा पहिले तो उससे घृणा करते थे परन्तु उसके स्नेह और सेवा ने उनके हृदय को जीत लिया।

"अभी अबला ने क्या सुख देखा था। पहिली ही रात में विधवा होगई। मुझको उस पर दया करनी चाहिये।"

धीरे धीरे वे कमला से प्रेम करने लगे। उसने थोड़े ही दिन में उनको छोटे राजा की याद भुला दी और उस जगह अपना कब्जा जमा लिया। पुजारी जी ने कई दफ़ा कमला को बुला भेजा परन्तु उन्होंने इन्कार कर दिया।

एक दिन दोनों बाग में बैठे हुए थे। कमला मधुर स्वर में गाना गा रही थी। बड़े राजा आंखें बन्द किये बड़े ध्यान से सुन रहे थे। गाना खतम होने पर उन्होंने कमला से पूछा "रानी बिटिया तुमको गाने का बहुत शौक है।"

"जी हां पिता जी"

"तुमने गाना कहां से सीखा था बेटा?"

"मैंने गाना सीखा तो कहीं नहीं।"

"मेरा ख्याल है कि तुम्हारे लिए एक मास्टर रखदूं जो तुमको गाना सिखाया करे। कहो ठीक है?"

"जैसी आप की मर्जी।"

"अरे बेटा यह मेरी खुशी कैसी? मैं तो तेरे लिये कर

रहा है।"

"वे मुझको क्या सिखावेंगे ?"

"जो तुम कहोगी।"

"अच्छा पहिले तो मैं वायलेन सीखूंगी। आप को भी तो पसन्द है।"

नौकर को साथ में लेकर खुद मोटर पर अंध-महाविद्यालय पहुँचे। संचालक से पता लगा कि एक सूरदास बहुत अच्छा गाते हैं। उनको बुलाया गया। उन्होंने राजा साहब को गाना गा कर सुनाया। वायलेन सुन कर राजा साहब खुश हो गये। पचास रुपये महीने पर उनको रख लिया। मोटर में साथ लेकर घर पहुँचे। कमला मोटर की आवाज़ सुन कर बाहर आई।

"रानी बिटिया मैं तुम्हारे लिये मास्टर लाया हूँ।

"कहां हैं ?"

सूरदास मोटर से उतरे और नौकर का सहारा ले आगे बढ़े। कमला ने ताज्जुब से देखा और दौड़ कर कमरे में गई और पलंग पर लेट ज़ोर २ से रोने लगी।

—— ——

वि

ध

वा

राजा साहब बड़ी देर तक रानी बिटिया के सिरहाने बैठे दिलासा देते रहे। कमला के आंसू बंद हो गये। किन्तु वह अपने इस रोने का कारण जानने का प्रयत्न कर रही थी। क्या उसकी आंखों ने उसको धोखा दिया। ज़रूर! इसके अलावा और क्या हो सकता है। धोखा यह कैसे सम्भव हो सकता है। जिस मूर्ति को वह सदा सुमरन करती है क्या अपनी आंखों से उसको नहीं पहिचान सकती? नहीं नहीं! उनको मरे तो बहुत दिन हो गये।

नहीं कमला नहीं। तेरी आंखों ने धोखा नहीं खाया। वे हैं तेरे देवता, तेरे प्यारे सं–तो–ष।

नहीं नहीं! मेरी आंखें अब मुझको और मत सताओ। बुझी

हुई ज्वाला को फिर जला कर तुमको क्या लाभ होगा ? मैं उसमें जल मरूंगी। शायद मुझको इस दुःख से छुटकारा मिल जाय।"

"संतोष तुम जीवित हो। तुम अवश्य जीवित हो। मेरा हृदय कह रहा है तुम जीवित हो। मेरा दिल चाहता है नाचूँ, कूदूँ। परन्तु मेरे इस उल्लास को कौन देखेगा ? संतोष तुम अंधे हो ! तुम अंधे हो !! तुम अपनी दुःखी कमला का दुःख नहीं देख सकते संतोष वह तुम्हारे प्रेम में पागलों की तरह रो रही है। वह कितनी दुबल हो गई है तुम अनुभव नहीं कर सकते। तुम नहीं देख सकते कि वह आज तुमको पा कर कितनी खुश है।"

"मैं क्या करूं ! मेरा हृदय फट क्यों नहीं जाता। वह यह जान कर कि मैं कौन हूँ मुझसे घृणा करेंगे।"

× × × × ×

"ठीक—ठीक मैं इनको मालूम ही न होने दूंगी कि मैं कौन हूँ। और फिर — —"

"रानी बिटिया क्या हाल है ?"

"अच्छा है पिताजी" धीरे से कमला ने कहा।

"तुमने रो रो अपना शरीर बहुत दुर्बल कर लिया है ऊपरी दुख शायद मालूम न हो परन्तु हृदय का दुःख छिपाये छिप नहीं सकता बेटा हम तकलीफ से नहीं डरते। उड़ा हुआ पची फिर हाथ नहीं आता।"

कमला रो रही थी किसी की याद में। राजा साहब रो रहे थे किसी और के ख्याल में।

८

"बेटा तुमको चाहिए कि अपने दुःख को किसी और की सेवा में भुलादो। तुमको हर वक्त रोता और रंजीदा देख कर मुझको बहुत दुख होता है तुम्हीं मेरे जीवन की एक मात्र सहारा हो। तुम दूसरी लड़कियों की तरह हँसो खेलो औरकूदो। मैंने तुम्हारे लिये मास्टर रख दिया है जो तुमको गाना सिखाएगा उम्मेद है कि उसमें तुम्हारा दिल बहल जाय।"

"नहीं पिताजी मैं उनसे गाना नहीं सीखूंगी" धीरे से कमला ने कहा।

"क्यों?" आश्चर्य से राजा जी चौंक पड़े।

"वे अंधे हैं। उनको देख मुझको बहुत दुख होगा। मैं किसी का दुख नहीं देख सकती।"

"नहीं रानी बिटिया नहीं। दुखी का दुख दूसरा दुखी ही जानता है जब दो दुखी मिल जाते हैं तो एक दूसरे अपना दुख भूल जाते हैं।"

कमला चुप रही।

"जिस प्रकार तुमने मेरा दुख भुलाकर अपने प्रेम से मेरे हृदय में नई रोशनी पैदा कर दी उसी भांति तुम उस अंधे को रास्ता दिखा सकती हो।"

———

दुख

का

राग

सूरदास जी फर्श पर बैठे वायलैन बजा रहे थे। कैसा मधुर राग था? हृदय को खींचे लेता था। रानी बिटिया और राजा साहब चुपके से उनके पास बैठ गये। वह राग खतम हो गया। राजा साहब ने सूरदास को एक गाना गाने को कहा। उन्होंने गाया

"नहीं पड़त पिया बिन चैन"

कमला के दो चार आंसू निकल पड़े। बिना किसी के देखे उसने उनको पोंछ डाला। राजा साहब गाना सुन कर और कमला को गाना सीखने को कह अन्दर चले गये।

"आप क्या सीखियेगा?" धीरे से अंधे ने कहा। उसके हर

वाक्य में दुख भरा हुआ था।

कमला चुप बैठी एक टक लगाये अंधे को देख रही थी।

"आप क्या सीखियेगा ?" फिर अंधे ने पूछा।

वायलेन बाजा उठा कर उसने एक तरफ रख दिया था उसको उठाना चाहा परन्तु पा न सका। कमला ने जल्दी से उठा कर उसके हाथ में दिया। अंधे ने कुछ भी नहीं कहा। सिर्फ उसके मुख पर एक चमक सी आगई जिससे यह साफ प्रकट होता था कि वह अपने हृदय में इस उपकार का धन्यवाद दे रहा है। कमला ने भी देखा। यह कैसा नया रंग था। क्या अंधा भी अपने भावों को विना आंखों के प्रगट कर सकता है ?

वायलेन बजा। उसकी उँगलियां तारों पर चलकर एक दुख भरा अलाप करने लगीं। कितना दुख भरा अलाप था। राग खतम कर अंधे ने वायलेन कमला की तरफ बढ़ाते हुए कहा "बजाइये।"

"मुझको नहीं आता।"

"अच्छा देखिये।" अंधे ने हाथ इधर उधर हिला कमला को वायलेन पकड़ने का तरीका बताया बड़ी देर तक कमला सीखती रही। क्या सीखा ? अंधा नहीं जानता था। वह उसका हाथ पकड़ डंडी तारों पर चलाता रहा। वह उन मुर्झाये हुए हाथों को देख कर रोती रही। एक दो बूंदें उसके हाथों पर गिर पड़ीं। वह चौंक पड़ा।

सिखाई खतम हो गई। कमला ने एक गाना सुनाने का आग्रह किया। अंधे ने गाना गाया। गाया एक दुःख भरा गाना। कमला रोती रही।

"और गाऊं" अंधे ने पूछा।

"नहीं" जल्दी मे कमला बोल उठी।

दोनों चुप थे।

"आप को दुख है ?" कमला ने पूछा।

अंधा चुप था।

"आप दुख के राग क्यों गाते हैं ?" फिर कमला ने पूछा।

कुछ देर दोनों चुप रहे।

"आप को दुख है ?" अंधे ने पूछा।

कमला चुप थी।

"आप क्यों रोती हैं ?" फिर अंधे ने पूछा।

दोनों चुप थे।

"आप का दुख भरा राग सुन कर मुझको रोना आता है आप के राग से दुख प्रगट होता है। आप क्यों दुख भरे गीत गाते हैं। ?"

"दुख का राग गाने से मेरा दिल हल्का हो जाता है।"

"आप बहुत दुखी हैं ?"

" हां और नहीं। अच्छी बात तो यही है कि दुख को हृदय में रख लिया जाय और दूसरों पर प्रकट न किया जाय।"

"क्या आप को अंधे होने का दुख है ?" कमला ने पूछा।

"नहीं नहीं ! जन्म के अंधे को अंधे होने का दुख नहीं होता।"

कमला के पैरों के तले से धरती निकल गई। उसकी आशाओं पर पानी फिर गया। उसने आश्चर्य से पूछा "जन्म से।"

"हां-हां। पहिले मेरे आंखें थीं। तब आखें होते हुए भी मैं अंधा था। अब आंखें नहीं हैं। फ़र्क सिर्फ इतना ही है।"

"आप पहिले अन्धे नहीं थे।"

"शक्ल में नहीं अक्ल में था।" हँसते हुए अन्धे ने कहा। "अब इस अंधेरे में मुझको एक नया ही संसार दिखाई देता है। इस अंधकार में इस दुनियां की सब बुरी २ बातें छिप गई हैं। अब मैं अपने दिमाग़ में अच्छी ही बातों को देख सकता हूँ। वे हर समय मेरी आंखों के सामने नाचती हैं। उनकी सुन्दरता बढ़ती रहती है और उनको कोई नष्ट नहीं कर सकता। जब मेरी आंखें थीं मैं दुनिया के सब अनर्थ देख सकता था। मुझको उससे घृणा थी। मेरे इस अंधकारमय संसार में सब बराबर हैं। सुब सुखी हैं।"

"उसमें कोई दुखी नहीं।"

"नहीं।"

पुनर्जन्म

कमला अंधे का हाथ पकड़ कर उसको बाग में ले गई और बेंच पर बिठा दिया। उसने गाना गाया वही दुख भरा गाना।

गाना खतम हो चुका था। कमला अंधे के पास बैठी एक टक उसकी ओर देख रही थी। "आप कौन हैं?" उसने धीरे से पूछा।

"यह मैं खुद नहीं जानता।" हंसते हुए अंधे ने कहा। "कोई नहीं जानता। मैं दुनियां की आंखों में मर चुका हूँ।"

"क्या?" आश्चर्य से कमला ने पूछा।

"कुछ नहीं। जब मेरी आंखें थीं मैं उनको देख सकता था। मुझको उनका दुःख देख उसे दूर करने की अभिलाषा होती थी।

मैं रात भर जागा करता था। सोचा करता था। वे कितने अनमोल दिन थे। अब मैं उनको पा नहीं सकता। उनको देख नहीं सकता। उनका दुख दूर नहीं कर सकता। वे उसी तरह पड़े रहेंगे। फिर मेरे दिल में आशा उठती है कि मेरा काम पूरा करने के लिये कोई अवश्य ही संसार में पैदा होगा। कार्य की ज्योति कभी बुझती नहीं। जब तक लकड़ी में आग नहीं लगती तब तक वह गर्मी नहीं पहुंचा सकती। परन्तु जब उसको एक बार आग लग जाती है तो धीरे २ भीषण ज्वाला बन बहुत सी गर्मी चीजों को भी जो जलना नहीं चाहतीं जला कर खाक कर देती है। सत्य की यह आग जल चुकी है। परन्तु मैं उसकी बढ़ती हुई ज्वाला को देख नहीं सकता।"

"ज्वाला को आप देख नहीं सकते परन्तु आपका हृदय अवश्य ही उस ज्वाला की गर्मी को अनुभव कर सकता है।"

"अक्सर बच्चे आग से खेलना पसंद करते हैं और उसे वे पकड़ने की कोशिश करते हैं परन्तु वे नहीं जानते कि आग में हाथ डालने से हाथ जल जावेगा। इसी प्रकार मैं उस कार्य से अधिक प्रेम करता था और उसको अग्नि की ज्वाला का अनुभव करना चाहता था परन्तु ऐसा कर सकने के पहिले ही मेरी आखें अंधी हो गई और मेरी हार्दिक आकांक्षा जी की जी में ही रह गई। अब इन अधूरी आशाओं की ज्वाला में मेरी आत्मा जली जा रही है। एक वह दिन था जब मेरे हृदय में प्रेम की अभिलाषाएँ थीं परन्तु मैंने उनको कुचल दिया। मैंने अपने प्रेम के आवेश में जो अत्याचार किये उनका ठीक बदला अब मुझको मिल रहा है।

तब मेरे दिल में प्रेम था। दिन २ मेरा प्रेम बढ़ता जा रहा था। मेरा हृदय हर समय मुझको सावधान करता कि मैं गलत रास्ते पर चल रहा हूँ परन्तु मैं आंखें बन्द किये चलता रहा। जब मेरी आंखें खुलीं मैं एक चौराहे पर खड़ा था। चौराहे के सब रास्ते मुझको अपनी ओर संकेत कर बुला रहे थे। मैंने सुख और प्रेम के सीधे रास्ते को छोड़ कर उस रास्ते की तरफ़ कदम बढ़ाया जिस पर बड़े २ अक्षरों में लिखा हुआ था "यह कठिन रास्ता है।" मैंने जोश के आवेश में कुछ नहीं सोचा। उस तरफ़ चल दिया। सामने आने वाली कठिनाइयों को दूर करने के विचार में मैं सुख और प्रेम सब भूल गया। मैं इन कठिनाइयों को दूर करने में एक नया ही आनन्द पाने लगा। अब मेरे सुख की दुनियां में बहुत सी प्रेमिकायें आ गईं। पहले मैं एक को प्रेम करता था –"

"वह कौन थी ?" रोते हुए कमला ने पूछा।

"वह कौन थी मैं नहीं जानता। उस पवित्र देवी की तस्वीर मेरे हृदय में खिंची हुई है।"

"आपने उसको छोड़ा क्यों ?"

"मुझको उससे प्रेम था। परन्तु मुझको वह प्रेम उसकी सुन्दरता से था। जिसने मुझको उसका गुलाम बना दिया था। जब वह सुन्दरता नष्ट हो जाती शायद मेरा प्रेम भी नष्ट हो जाता। परन्तु अब मेरे हृदय की देवी हमेशा उसी तरह बनी रहेगी। उसकी सुन्दरता नष्ट नहीं हो सकती। मैं न मिटने वाली इस सुन्दर देवी को प्रेम कर हमेशा प्रसन्न रहूँगा। वह भी हमेशा

मुझको उसी नज़र से प्रेम करती रहेगी।"

"क्या वह भी आप से प्रेम करती थी ?"

"हां बहुत।" धीरे से अंधे ने कहा।

"उसको बहुत दुख हुआ होगा।"

"शायद परन्तु जो मैंने किया ठीक था। मैं अपने कर्त्तव्य पर प्रेम की आहुति चढ़ा सकता था। मैं हज़ारों की आहें सुनकर अपने प्रेम और सुख को ठुकरा सकता था। जो मैंने किया ठीक था।"

"ठीक था।" कमला ने गुस्से से कहा। "ठीक था। एक तरफ़ आपका कर्त्तव्य था और दूसरी तरफ़ एक अबला का प्रेम। तुमने अपने कर्त्तव्य के ख्याल में उसके प्रेम को ठुकरा दिया। उसका जीवन नष्ट करते तुमको दया नहीं आई। तुम दुष्ट हो दुष्ट। तुमने मेरे प्रेम की कुछ भी क़दर नहीं की। तुम उसको ठुकरा कर चले गये। तुम — तुम —।" कमला का गला भर आया। वह बोल न सकी। आंखें मूंद जोर २ से रोने लगी।

"कमला"

"संतोष"

———

ज्वाला

मुखी

बहुत दिन बीत गये। कमला ने संतोष से बहुत कम बातें कीं। सिर्फ गाना सीखने जाती। आज बड़ा सुहावना दिन था। संतोष का हाथ पकड़ बाग में गई। उनको एक बेंच पर बिठा वह एक तरफ चली गई। संतोष बेंच पर बैठे बड़ी देर तक सोचते रहे कि उनको क्या करना चाहिए।

कमला के कारण उनको आंखों की कमी बिल्कुल अनुभव नहीं होती थी और वे एक नई ही दुनियां में घूम रहे थे जिसका सुख और दुःख वे अनुभव कर सकते थे परन्तु देख नहीं सकते थे।

मेरे विषय में कमला के क्या विचार होंगे। वह मुझको भूली नहीं। उन्होंने पिछले दिनों की सब बातें ख्याल कीं और उनको

निश्चय हो गया कि कमला की शादी हो गयी है। आज कल ससुराल में है। परन्तु यह उनके समझ में न आया कि कमला दुखी क्यों है ?

किसी ने बाग में गाना शुरू किया।

कमला का गाना सुन संतोष चौंक पड़े। वह उसने आखीरी दिन गाया था। आज उसमें बहुत ही दुख भरा था। संतोष की आंखों के आंसू नहीं रुक सके। वे रो उठे और लकड़ी टेकते हुए उधर गये जिधर से गाने की आवाज आ रही थी। कमला आहट पा कर चुप हो गई।

"कमला" धीरे से संतोष ने कहा।

कमला चुप घास पर मुंह औंधा कर रो रही थी।

"रानी बि – –।"

"नहीं संतोष ! मुझको रानी बिटिया कह कर मत चिढ़ाओ।"

"क्यों ?"

"मैं आपके मुंह से कमला का नाम सुनना चाहती हूँ। उससे मेरे हृदय को बहुत सुख मिलता है।"

"यह ठीक नहीं है। मेरा ख्याल था कि शादी के बाद तुम पुरानी बातें भूल गई होगी।"

"परन्तु मेरी शादी नहीं हुई।" रोते हुए कमला ने कहा।

आश्चर्य से संतोष ने पूछा "शादी नहीं हुई ?"

"तुम मुझको नहीं समझ सके। दुनियां मुझको नहीं समझ सकी। औरों का क्या कहना मेरे पिता भी मुझको नहीं समझ सके।

आपकी मृत्यु के समाचार पाने के बाद मेरे पिता ने मुझसे बहुत आग्रह किया। मेरे प्रण और प्रेम की उन्होंने परवाह नहीं की। उनका आग्रह और दुख देख मैंने हां कर दी। उनके प्रेम और आग्रह के कारण मुझे राजी होना पड़ा परन्तु मैंने यह प्रण कर लिया की जीवन रहते मैं किसी और को हृदय से प्रेम न करूंगी।"

"क्यों ?"

"मैं अपना हृदय आपको दे चुकी थी। अपना शरीर मैंने अपने पिता के प्रेम पर न्योछावर कर दिया। मेरी शादी हो गई। विधाता ने मेरी प्रार्थना स्वीकार की और मैं पहिली ही रात को विधवा हो गई और मेरा जीवन नष्ट होने से बच गया।"

"विधवा ?"

"हां ! दुनियां जानती है कि मेरी शादी हो गई और मैं विधवा हूं। परन्तु मेरी शादी नहीं हुई। मैं विधवा नहीं हूं।"

"कैसे ?"

"मेरे हृदय के पति अभी जीवित हैं।"

"कमला ! ऐसे शब्द अपनी जबान से निकाल मेरे हृदय की खिंची हुई सुन्दर मूर्ति को नष्ट मत करो।"

"मैं उसको नष्ट नहीं कर रही हूं। दुःख और समय की मूसलाधार वर्षा से उस पर काई चढ़ गई थी। अपने प्रेम से मैं उसको फिर से नया कर रही हूं।"

"प्रेम !" घृणा से संतोष ने पूछा।

"हां संतोष मैं तुम से प्रेम करती हूं।"

"मैं तुम से घृणा करता हूँ। तुम विधवा हो। तुमको ईश्वर से प्रेम करना चाहिये मनुष्य से नहीं।"

"मेरे ईश्वर आप हैं।" रोते हुए कमला ने कहा। संतोष एक ओर को चल दिये। कमला ने पैर पकड़ उनको रोक लिया। वे खड़े हो गये।

"क्या आप मुझको भूल गये। क्या आप मुझको प्रेम नहीं करते? मैंने क्या २ दुख झेले क्या आप नहीं जानते? मेरा हृदय कहता है कि आप जरूर मुझ से प्रेम करते हैं। बताइये! बताइये आप मुझ से प्रेम करते हैं कि नहीं!! तुम चुप खड़े हो। क्या तुम मेरा दुःख अनुभव नहीं कर सकते? बोलो! संतोष बोलो!!"

"कमला! यह तुमको क्या हो गया है? पागल मत बन जाओ।"

"मैं पागल हूँ! पागल हूँ!! प्रेम में सब पागल हो जाते हैं। दुखकी ज्वाला से धधक कर प्रेमी का हृदय ज्वालामुखी पहाड़ की नाईं फट जाता है और लावे की तरह वह अपने भावों को रोक नहीं सकता।"

"कमला यह लावा सब वस्तुओं को जला कर खाक कर देता है। धरती हिल जाती है। सब मनुष्य परमात्मा को कोसते हैं और जब ज्वालामुखी शांत हो जाता है तो उसमें सिवा अंधकार के और कुछ नजर नहीं आता।"

कमला रो रही थी।

"कमला तुम मुझको भूल जाओ। जिस तरह मैं दुनियां की नज़रों में मर चुका हूँ उसी तरह — —"

"नहीं! संतोष नहीं!! मेरी ज़िन्दगी को बर्बाद मत करो। मेरी उभड़ी हुई आशा को फिर मत कुचलो। मैंने इस दुनियां में कुछ सुख नहीं देखा। मेरे दिल में अभिलाषायें हैं, प्रेम है संतोष – – – मैंने तुम्हारे सिवा किसी और को प्रेम नहीं किया और मैं तुमको कैसे भूल जाऊं? यह मुझ से नहीं – –।"

"रानी बिटिया" राजा साहब ने अन्दर से आवाज़ दी।

———

स्वप्न

रात बहुत बीत गई थी। कमला पलंग पर पड़ी रो रही थी। इतने में एक आहट सुन कर चौंक पड़ी। उसको कुछ शक़ हुआ और वह सन्तोष के कमरे की तरफ गई। सन्तोष बाहर जाने का प्रयत्न कर रहे थे परन्तु दर्वाज़ा बन्द था। कमला दर्वाज़ा खोल कर अन्दर गई और अन्दर से सिटकिनी बन्द कर दी।

सन्तोष "कौन ?"

"आप जा रहे हैं ?"

"हां"

"कहां ?"

"जहां पेट ले जायगा।"

"नहीं सन्तोष तुम नहीं जाओगे।"

"कमला मेरा यहां ठहरना ठीक नहीं।"

"क्यों ?"

"मेरे कारण तुम अपना कर्तव्य भूल रही हो। मैं भारत की नारियों के बनाये हुए ऊंचे आचरण को मिट्टी में मिलाना नहीं चाहता। तुम विधवा हो। पति हीन हो और जिस तरह भारत की हजारों नारियां भारत के नाम को उज्ज्वल करने के लिए बिना हां या हूं किये अपने जीवन का बलिदान कर देती हैं उसी भांति ईश्वर प्रेम में लीन होकर तुमको भी आदर्श प्राप्त करना चाहिये।"

"स्त्री के लिए पति ही ईश्वर है। पति ही देवता है और आप मेरे पति हैं।"

"नहीं" जोर से सन्तोष ने कहा।

"मैं जिसको अपना हृदय दे चुकी हूं वही मेरा पति है। दुनियां के अत्याचार से मैं इस जाल में फंसा दी गई। परन्तु मैं अपने प्राणों को नहीं भूल सकती. आप मेरे देवता हैं।"

"कमला तुम्हारे मन में ऐसी कामनाएं हैं जो तुमको नर्क की ओर खींच रही हैं।"

"हां सन्तोष मेरे मन में कामनाएं हैं। बहुत सी आशाएं हैं। इतनी बहुत सी अभिलाशाएं हैं जो अभी तक पूरी नहीं हुई। मैंने किसी को सताया नहीं। तो मुझको यह दुख क्यों भोगना पड़ रहा है ? मैं नहीं सह सकती। उल्टे पुल्टे रिवाज को कायम रखने के वास्ते मैं अपनी इच्छाओं को मिट्टी में न मिलने दूंगी।"

"कमला"

"मैंने दुनियां में कुछ सुख नहीं देखा। क्या मेरा हृदय प्रेम से भरा हुआ नहीं? क्या उसमें उमंगें नहीं? क्या मेरा हृदय सुख देखना नहीं चाहता? अच्छी २ चीजें देख क्या मुझे खुशी नहीं होती? बताओ मैंने दुनियां में क्या देखा है? बताओ मैंने क्या पाप किये हैं? जो सब कहते हैं कि मैं दुनियां को त्याग दूँ। तुम क्यों कहते हो कि मैं तुमको भूल जाऊँ? बोलो सन्तोष! बोलो।"

"कमला"

"नहीं सन्तोष नहीं। अब यह हरगिज नहीं होगा। दुनियां कहती है कहने दो। वह मुझको नीच कहती है कहने दो। मेरे मन की कामनाएँ अब तुमको पूरी करनी होंगी। मैं तुमको कभी न जाने दूँगी। मैं तुम्हारे अंधरे की लाठी बनूंगी और तुम मेरे सुख का कारण। मैं अब जिधर तुमको ले जाऊँगी तुमको चलना पड़ेगा। हम सुखसे रहेंगे। अगर इस सुख की दुनियां को पाप कहते हैं तो मैं उसकी परवाह नहीं करती। मैंने बहुत दुख भोग लिये हैं और मैं अब ज्यादा दुख नहीं भोग सकती। अगर मेरे कारण भारत के नाम पर धब्बा लगता है तो यह मेरी गलती नहीं यह उनकी मूर्खता का कारण है।"

"कमला! कमला!!"

"सन्तोष बहुत हो चुका। अब मुझसे सहा नहीं जाता। मेरा हृदय अब नहीं मानता। मैं तुम्हारे लिये पैदा हुई थी और तुम मेरे

लिये। अब हम हमेशा इकट्ठे रहेंगे। दुनियां हम पर हँसती है हँसने दो। जब तक तुम मेरे पास रहोगे मुझको और किसी के सहारे की जरूरत नहीं।"

"कमला"

"हां सन्तोष सत्य है। मैं तुमको बहुत प्रेम करती हूं। अगर तुम अब मुझको छोड़ कर चले जाओगे तो मैं अवश्य मर जाऊँगी। क्या तुमको यह जान कर कि तुम्हारी कमला मर गई कुछ दुख नहीं होगा। नहीं सन्तोष नहीं। तुम इतने निर्दयी नहीं हो। बोलो क्या तुम मुझसे प्रेम नहीं करते ?"

"कमला मैं तुमको बहुत प्रेम करता हूं।"

कमला फर्श पर बैठ गई और सन्तोष की जांघों में सिर रख कर रोने लगी।

"तुम अब कभी नहीं जाओगे।"

सन्तोष रो रहे थे।

"बोलो सन्तोष बोलो। मेरे हृदय की जलती हुई ज्वाला को अपने प्रेम भरे शब्दों से जरा शांत करदो। शकुन्तला को कुछ दिन दुख देखने के बाद अपने पति मिल गये थे। क्या मुझसे सालों के बाद मिले सन्तोष प्रेम की बातें न करेंगे।"

कमला ने सन्तोष के हाथ पकड़ लिये। उन्होंने कमला को उठा कर हृदय से लगा लिया। कमला उनके गले पर सिर रक्खे रो रही थी।

वे दोनों रो रहे थे। वे खुशी के आंसू थे।

"कमला" गुस्से में राजा साहब ने आवाज दी।

स्वप्न टूट गया।

———

वि

दा

ई

सन्तोष रात को चले गये। कहां चले गये किसी को पता नहीं। कमला पलंग पर पड़ी रो रही थी। राजा साहब के आने की आहट सुन कर उसने अपना मुंह छिपा लिया। शर्म से वह डूबी जा रही थी। राजा जी आकर पास खड़े हो गये।

"कमला" धीरे से राजा साहब ने कहा। "मैं तुमको बहुत नेक समझता था।"

कमला रो रही थी।

उन्होंने कुछ कहना चाहा लेकिन फिर रुक गये। वे अपनी रानी बिटिया को बहुत प्यार करने लगे थे। और इस प्रेम ने उनको कठिन शब्द कहने से रोक लिया। शायद बालिका के

हृदय में बहुत चोट लग जाय।

"तुम अपने पिता के यहां चली जाओ" और वे यह कह पीछे की ओर चल दिये।

"नहीं मैं नहीं जाऊँगी" रोते हुए कमला ने कहा।

राजा साहब की सोई हुई धारणा जाग उठी। उन्होंने गुस्से से कहा "मैं तुमको अपने घर में रख कर अपनी लुटिया डुबाना नहीं चाहता। अभी तक मैं तुमको सती साध्वी समझता था। तुमको नेक और पाक जानता था परन्तु आज पता लग गया कि तुम पापिन हो।"

"नहीं"

"अपनी आंखों से देखी हुई बात को मैं कैसे झूठ मान सकता हूँ। पराये पुरुष से प्रेम करना विधवा का धर्म नहीं। तू पापिन है पापिन।"

"मैं पापिन नहीं हूँ" कमला उठ कर पलंग पर बैठ गई उसके बाल बिखरे हुए थे। आखों से घृणा और क्रोध की चिनगारियां निकल रही थीं। उसने घायल सिंहनी की भांति कहा "सुन लो अच्छी तरह से सुन लो और अगर जी चाहे तो सारी दुनियां को सुना दो। मैं सन्तोष से प्रेम करती हूँ और मरते दम तक प्रेम करती रहूँगी। मैं शादी से पहिले उनसे प्रेम करती थी। वे नीच थे इसलिये मेरे पिता ने मेरी शादी उनसे नहीं की और तुम्हारी बहू बना दिया। पहिली रात में विधवा हो गई तब तुमने कुछ नहीं कहा। वो मर गये अपने पाप कर्म के कारण। परन्तु मैं उसके

कार्यों का दुख क्यों भोगूं ? मैं विधवा हूं परन्तु मेरे हृदय में सच्चा प्रेम है। मैंने सिवा सन्तोष के और किसी को प्रेम नहीं किया। मैं पापिन नहीं हूं। दुनियां पापी है, तुम पापी हो।"

राजा साहब चुप खड़े सब सुन रहे थे।

"मैं जाऊंगी और अवश्य जाऊंगी लेकिन पिता के यहां नहीं। मैं वहां जाऊंगी जहां मेरा प्रियतम है। अब आप मुझको व्यर्थ रोकने की कोशिश न करें।"

राजा साहब उठ कर चले गये। बाहर निकल कर उन्होंने रूमाल से आंसू पोंछ लिये।

रात पड़ गई। कमला ने दो एक कपड़े लपेटे और बिना खटका किये हमेशा के लिये ससुराल से विदा हो गई।

———

सत

सङ्ग

कमला ऋषीकेश चली गई। यहां श्री गंगा जी के तट के समीप एक आश्रम था जहां बहुत सी सत्संगी औरतें रहती थीं। वह भी उन त्यागिनियों में मिल गई।

उस मठ के कर्त्ता धर्ता एक बड़े तपस्वी थे। कमला उनके पास गई और प्रणाम कर उनसे मठ में शामिल होने की आज्ञा मांगी। वह युवती थी, सुन्दर थी उसके चेहरे से बचपन के चिन्ह दिखाई देते थे। परन्तु दुख ने उन पर भी अपना प्रभाव जमा रक्खा था।

स्वामी जी ने आशीर्वाद देते हुए उसको अपने पास बिठा लिया और स्नेह से पूछा। "बेटा तुम्हारे माता पिता कोई नहीं हैं।"

"हैं! मेरे पिता जीवित हैं।"

"तो फिर तुम उनके पास क्यों नहीं जातीं ?"

"मैंने यह प्रण कर लिया है कि ईश्वर भक्ति में अपना शेष जीवन बिता दूँगी।"

"परन्तु बेटा तुम ईश्वर भक्ति घर में भी कर सकती हो। स्त्री का धर्म है कि वह घर में ही अपना जीवन बिताए। घर का कार्य ही उसके लिए काफ़ी है।"

"नहीं स्वामी जी मैं घर नहीं जाऊंगी। मैं अब आप के आश्रम में रह कर जीवन व्यतीत कर दूंगी। मैंने घर न जाने की प्रतिज्ञा कर ली है।"

"क्यों बेटा तुझको अपने घर से इतनी चिढ़ क्यों है ?"

"चिढ़ नहीं। दुख होता है। मुझको वहां जाते शर्म आती है। कुछ दिन पहिले मैं वहां प्रेम से नाचती गाती थी। अब मैं वहां जा कर दुख के दिन नहीं काट सकती।"

"तुमको क्या दुख है ?"

"मैं विधवा हूं।"

स्वामी जी कुछ देर सोचते रहे फिर उन्होंने कहा "मैं तुमको अपने आश्रम में रख लूंगा परन्तु तुमको यहां के सब नियम मानने होंगे।"

कमला ने सिर झुका दिया।

"इस मठ का पहिला नियम है ईश्वर भक्ति. हम सब ईश्वर की पूजा करते हैं। दुनियां के सब पुरुषों को तुमको अपना भाई समझना होगा और सब स्त्रियों को बहिनें। जिस किसी को इस

दुनियां से प्रेम है वह हमारे संग में नहीं रह सकते। तुमको यह नियम स्वीकार है ?"

कमला ने सिर हिला दिया।

"तुमको यह जीवन बहुत कठिन मालूम होगा। यहां मोटी सूखी रोटी सिर्फ एक बार मिलती है वह भी यदि आए हुए यात्रियों के खिलाने से बच जाय तब। उपवास तो अकसर ही करना पड़ता है। तुम अच्छी तरह सोच लो कि इस सतसंग में सिवा दुख के कोई सुख की आशा नहीं। जो सुख भोगना चाहते हैं वे यहां नहीं रह सकते।"

कमला सिर झुकाए सब सुन रही थी।

"हमारे मठ में बहुत सी देवियां हैं जिन्होंने संसार को हमेशा के लिए त्याग दिया है। तुमको भी वैसा ही जीवन व्यतीत करना होगा। तुम्हारे किसी कार्य से हमारे मठ को कोई हानि नहीं होनी चाहिये। जाओ माता जी से कह दो।"

कमला प्रणाम कर चली गई। माता जी ने उसको कोठरी दिखा दी। वहां पर एक चटाई पड़ी थी। एक लुटिया और एक टूटी हुई थाली। कमला ने सफेद साड़ी बदल गेरुआ वस्त्र धारण कर लिए।

———

दु

खि

या

बहुत दिन बीत गये. कमला रोज सूर्य्य उदय होने से पहिले उठती और ईश्वर प्रार्थना कर यात्रियों के लिए खाना बनाती। इस कार्य में वह अपने पुराने सब ख्यालात भूल गई। प्रार्थना के समय वह हमेशा ईश्वर से संतोष के सुखी रहने के लिए प्रार्थना करती।

थाली परोस पंगत को देने गई। कुछ यात्री हरिद्वार से आए हुए थे। नई खबरें सुना रहे थे।

एक ने कहा—"देखो दुनियां में कितना पाप है ?"

दूसरा यात्री—"कहो भाई उनका क्या हाल है ?"

पहिला यात्री—"भैय्या आज उपवास का बीसवां दिन है।"

तीसरा यात्री–"मालूम भी हो कि वे उपवास क्यों कर रहे हैं?"

पहिला यात्री–"कहते हैं पार्वती जी के मंदिर में जायंगे।"

चौथा यात्री–"तो भाई जाने क्यों नहीं देते?"

पहिला यात्री–"वाह भाई खूब कही। कभी नीच भी वहां जा सकते हैं?"

कमला सुन रही थी। पत्थर की मूर्ति की नाईं वह वहां खड़ी हो गई। अन्य प्रकार के विचार उसके दिमाग़ में घूम रहे थे।

पांचवा यात्री–"वह हैं कौन?"

पहिला यात्री–"मैं नहीं जानता।"

दूसरा यात्री–"अब उनका क्या हाल है?"

पहिला यात्री–"मुश्किल से एक दो दिन जियेंगे।"

कमला के हाथ से थाली गिर पड़ी।

रात पड़ चुकी थी। मठ की सारी त्यागनियें सोगईं सिर्फ़ कमला को नींद नहीं पड़ रही थी। वह उठी धीरे २ कदम दबा कर बाहर निकल गई। थोड़ी ही दूर पर एक बाड़ा था। उसी में यात्री ठहरे हुए थे। कमला ने धीरे से टट्टर खोला और अंदर चली गई। सब यात्री जल पानी करके सो गये थे। वह सबेरे वाले बुड्ढे यात्री की खोज करने लगी परन्तु वह कहीं दिखाई नहीं दिया। उसने फिर ढूंढा निराशा उसको सता रही थी। हर पल उसके लिये एक कल्प के समान था। वह पतली धोती पहिने सर्दी में कांप रही थी।

कुछ आदमी मुंह ढांपे एक ओर सो रहे थे। वह सोचने लगी

कि किसको जगाए । शायद कोई और निकल पड़े तो मैं क्या कहूंगी । तो क्या मैं छोड़ दूं और सब भूल जाऊं । नहीं मैं उनको आखिरी बार ज़रूर मिलूंगी ।

हिम्मत कर वह आगे बढ़ी और एक आदमी को जो ज़ोर २ से खुर्राटे ले रहा था धीरे से हिलाया । बड़ी देर बाद उसने आखें खोलीं और कमला को देख कर हक्का बक्का रह गया ।

कमला ने इशारे से उसको बोलने से मना कर दिया और उसका हाथ पकड़ कर वह उसको बाहर ले गई ।

"आप हरिद्वार से आए हैं ?" धीरे २ कमला ने पूछा ।

"हां"

"वह कौन हैं ?"

"वह कौन ?"

"जो पार्वती जी के मंदिर पर धरना कर रहे हैं ।"

"मैं नहीं जानता"

"क्या वे अंधे हैं ?"

"हां"

कमला आखों पर हाथ रख ज़ोर २ से रोने लगी ।

"वह तुम्हारे कौन हैं ?" दिलासा देते हुए बुड्ढे ने पूछा ।

कमला चुप रही ।

"क्या तुम उनको जानती हो ?"

"हां" रोते हुए कमला ने कहा । बुड्ढे का दिल भी कमला की यह हालत देख कर पसीज गया ।

"उनका क्या हाल है ?"

"कई दिन हुए उन्होंने भूख हड़ताल शुरू की थी। ब्राह्मणों ने दर्वाज़ा खोलने से इंकार कर दिया।"

"तुमने उनको कब देखा था ?"

"दो दिन हुए।"

"क्या हाल था ?"

"बहुत बुरा"

"क्या वे अभी जीवित होंगे ?"

"शायद"

"मुझको उनके पास ले चलो।"

"परन्तु यह कैसे हो सकता है।"

"क्यों नहीं ! क्या तुमको मेरी दशा देख दया नहीं आती ? वे मेरे — —।"

"वह तुम्हारे — —।"

"मैंने इस संसार में उनके सिवा किसी और को प्रेम नहीं किया। वे मेरे देवता हैं। वे ही मेरे ईश्वर हैं। वह अपनी कमला को अकेला छोड़ कर हमेशा के लिये जा रहे हैं। क्या तुमको एक अनाथ अबला पर दया नहीं आती। चलो मुझको ईश्वर के लिए उनके पास ले चलो।"

"अच्छा सबेरे — —।"

"नहीं अब मैं यहां एक घड़ी नहीं ठहर सकती। मैं हाथ जोड़ती हूं कि मुझको उनके पास तुरन्त ले चलो। मैं उनसे अंतिम

बार मिलना चाहती हूं। मेरा हृदय कह रहा है कि वे मुझ से मिलने की आशा कर रहे हैं। मुझको जल्दी ले चलो। कहीं वे मेरे जाने से पहिले — —।"

"परन्तु स्वामी जी"

"वे यह जान कर अवश्य नाराज़ होंगे। परन्तु मेरा कर्त्तव्य क्या है मैं अच्छी तरह जानती हूँ। ईश्वर के लिए मुझको जल्दी ले चलो। मेरे पास इस संसार में कुछ नहीं है जिससे मैं तुम्हारे इस उपकार का बदला दे सकूं सिर्फ मेरे हृदय में एक दुखिया की प्रार्थना होगी और उसमें मैं हमेशा तुमको धन्यवाद देती रहूंगी। हर घड़ी मेरे लिए एक दिन हो रहा है। मैं रास्ता नहीं जानती नहीं तो अकेली ही चली जाती। ईश्वर के लिये चलो।"

दोनों चल दिये उस अंधेरी रात में।

मूर्ति

बहुत सी चिनगारियां उठीं और बढ़ कर भीषण ज्वाला बन गईं। उस ज्वाला में वह चिनगारियां जिनसे आग लगी थी छिप गईं।

संतोष लाठी टेकते कई गांव में गये। कोई उनको जानता न था। कोई उनको पहचानता न था। परन्तु उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। अपना कर्तव्य पालन करने के लिये वे दृढ़ संकल्प रख कर कोशिश करते रहे। किसी गांव में तो कोई दया कर उनको कुछ खाने पीने को दे देता। कई गांव से ब्राह्मणों ने धक्के लगा कर निकाल दिया।

घूम फिर कर वे कुछ दिन बाद हरिद्वार पहुंचे। उनको ऐसा मालूम हो रहा था कि उनके आखिरी दिन आ गये थे। दुख

और दर्द के मारे उनके पैर नहीं उठते थे। एक रात को वे पार्वती जी के मंदिर की सीढ़ी से टकरा कर गिर पड़े और फिर वहीं ही पड़े रहे। ब्राह्मणों ने हज़ार कोशिश की पर वे न माने। किसी ने सूखी मोटी रोटी दे दी तो वह खाली। किसी ने पानी दे दिया तो पी लिया नहीं तो भूखे प्यासे वे वहीं पड़े दुख के गीत गाते रहे। लड़कों ने यह जान कि पागल है खूब पत्थर मारे। दो दिन में उनकी हालत बहुत खराब हो गई थी। न बोलते, न हिलते, न भजन गाते। रात को बड़ी मूसलाधार वारिश हुई। उनको कुछ होश आया। धीरे से गुन गुनाया। "भजो मन हरि नाम" और फिर चुप होकर लेट गये।

कोई आया, दौड़ता हुआ आया, और दौड़ कर उनको गले से लगा लिया।

"क – म – ला"

वह बोली नहीं। छाती पर सिर रक्ख वह रो रही थी।

"मैं जानता था कि तुम एक बार अवश्य आओगी। कमला तुम देवी हो। रोओ मत! रोने से कुछ नहीं होगा। एक दिन हम सब को इस संसार से जाना है।"

कमला रो रही थी।

"तुमको आज प्राप्त कर कमला मुझको ऐसा अनुभव हो रहा है जैसे मैंने देवी के दर्शन कर लिये। कमला तुम ईश्वर भक्ति में हृदय लगाना और मेरा कोई विचार मत करना। मैं यहां पर ही मर जाऊंगा। ये मेरी लाश गंगा में फेंक देंगे। दुनियां मुझको

भूल जायगी। तुम भी मुझको भूल जाना।"

"संतोष उठो मैं तुमको ले जाऊंगी।"

"कहां ?"

"जहां तुम कहोगे।"

"नहीं, कमला नहीं। अब मैं और कहीं नहीं जाऊंगा। तुम जाओ। मेरा हृदय बहुत शांत है। (देखने वालों ने बहुत से पत्थर फेंकें) इन सब से कह दो कि पत्थर — —।"

कमला उठी। पागलों की नाई चिल्ला चिल्ला कर कहने लगी। "पापियो! तुमको दया नहीं आती। एक मरते हुये को मारते तुमको लज्जा नहीं आती। तुम दुष्ट हो, पापी हो, तुम सब नर्क में जाओगे।"

सब हंस दिये।

कमला ने पास पड़े पत्थर उठा २ मारना शुरू कर दिये। भीड़ कुछ पीछे हट गई।

(संतोष को उठाने की कोशिश करते हुए) "चलो संतोष चलें"

"कहां ? कमला कहां ?"

"जहां तुम कहोगे संतोष।"

"अच्छा मुझको मूर्ति के दर्शन कराने के लिये मंदिर में ले चलो।"

कमला ने संतोष को उठाना चाहा परन्तु उठा न सकी।

"कमला व्यर्थ है! रहने दो!!"

कमला दौड़ती हुई मंदिर की सीढ़ियों पर चढ़ गई।

"क--म--ला"

किसी ने संतोष की तरफ़ एक पत्थर फेंका। एक आह निकाली।

कमला मूर्ति उठा कर दौड़ी।

मर गया ! मर गया !! मर गया !!!

मंदिर की ड्योढ़ी से टकरा कर कमला गिर पड़ी। मूर्ति टूट गई। मूर्ति का टूटा हुआ सिर संतोष के हाथों में जा रहा।

× × × × ×

रात्रि के भीषण अंधकार में एक चिता जली। दो प्रेमियों के प्रेम से जलती हुई वह ज्वाला अंधकार में भूले हुओं को सीधा मार्ग दिखाती थी।

———